सूरह अम्बिया

तम्हीदी कलिमात

सूरह मरियम के आग़ाज़ में तम्हीदी कलिमात के तहत तीन सूरतों पर मुश्तमिल इस ज़ेली ग्रुप का तआरुफ़ हो चुका है, जिसकी आख़री सूरत सूरतुल अम्बिया है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

आयात 1 से 10 तक

اِقۡتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُہُمۡ وَہُمۡ فِیۡ غَفۡلَۃٍ مُّعۡرِضُوۡنَ ۙ﴿۱﴾ مَا یَاۡتِیۡہِمۡ مِّنۡ ذِکۡرٍ مِّنۡ رَّبِّہِمۡ مُّحۡدَثٍ اِلَّا اسۡتَمَعُوۡہُ وَہُمۡ یَلۡعَبُوۡنَ ۙ﴿۲﴾ لَاہِیَۃً قُلُوۡبُہُمۡ ؕ وَاَسَرُّوا النَّجۡوَی ۖ الَّذِیۡنَ ظَلَمُوۡا ۖ ہَلۡ ہٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثۡلُکُمۡ ۚ اَفَتَاۡتُوۡنَ السِّحۡرَ وَاَنۡتُمۡ تُبۡصِرُوۡنَ ﴿۳﴾ قٰلَ رَبِّیۡ یَعۡلَمُ الۡقَوۡلَ فِی السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ ۫ وَہُوَ السَّمِیۡعُ الۡعَلِیۡمُ ﴿۴﴾ بَلۡ قَالُوۡۤا اَضۡغَاثُ اَحۡلَامٍۭ بَلِ افۡتَرٰىہُ بَلۡ ہُوَ شَاعِرٌ ۟ فَلۡیَاۡتِنَا بِاٰیَۃٍ کَمَاۤ اُرۡسِلَ الۡاَوَّلُوۡنَ ﴿۵﴾ مَاۤ اٰمَنَتۡ قَبۡلَہُمۡ مِّنۡ قَرۡیَۃٍ اَہۡلَکۡنٰہَا ۚ اَفَہُمۡ یُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۶﴾ وَمَاۤ اَرۡسَلۡنَا قَبۡلَکَ اِلَّا رِجَالًا نُّوۡحِیۡۤ اِلَیۡہِمۡ فَسۡـَٔلُوۡۤا اَہۡلَ الذِّکۡرِ اِنۡ کُنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۷﴾ وَمَا جَعَلۡنٰہُمۡ جَسَدًا لَّا یَاۡکُلُوۡنَ الطَّعَامَ وَمَا کَانُوۡا خٰلِدِیۡنَ ﴿۸﴾ ثُمَّ صَدَقۡنٰہُمُ الۡوَعۡدَ فَاَنۡجَیۡنٰہُمۡ وَمَنۡ نَّشَآءُ وَاَہۡلَکۡنَا الۡمُسۡرِفِیۡنَ ﴿۹﴾ لَقَدۡ اَنۡزَلۡنَاۤ اِلَیۡکُمۡ کِتٰبًا فِیۡہِ ذِکۡرُکُمۡ ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۱۰﴾

आयत 1

اِقۡتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُہُمۡ وَہُمۡ فِیۡ غَفۡلَۃٍ مُّعۡرِضُوۡنَ ۙ﴿۱﴾

"लोगों के लिये उनके हिसाब का वक़्त क़रीब आ चुका है, लेकिन वह गफ़लत में पड़े ऐराज़ किये जा रहे हैं।"

आयत 2

مَا یَاۡتِیۡہِمۡ مِّنۡ ذِکۡرٍ مِّنۡ رَّبِّہِمۡ مُّحۡدَثٍ اِلَّا اسۡتَمَعُوۡہُ وَہُمۡ یَلۡعَبُوۡنَ ۙ﴿۲﴾

"नहीं आती इनके पास उनके रब की तरफ़ से कोई नई नसीहत मगर ये उसको सुनते हैं खेलते हुए।"

जब भी इनकी तरफ़ कोई नई वही आती है, कोई नई सूरत नाज़िल होती है तो वह उसे अपने मख्सूस ला-अबालियाना अंदाज़ में ही सुनते हैं। वह अल्लाह के कलाम की तरफ़ कभी भी संजीदगी से मुतवज्जे नहीं होते।

आयत 3

لَاہِیَۃً قُلُوۡبُہُمۡ ؕ

"इनके दिल खेल के खोगर हो चुके हैं।"

इनका गैर-संजीदा रवैय्या इस हद तक इनके दिलों में घर कर गया है कि इन्होंने ज़िंदगी को भी एक खेल ही समझ रखा है।

وَاَسَرُّوا النَّجۡوَی ۖ الَّذِیۡنَ ظَلَمُوۡا ۖ

"और ये ज़ालिम ख़ुफ़िया तौर पर सरगोशियाँ करते हैं"

ہَلۡ ہٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثۡلُکُمۡ ۚ

"कि नहीं हैं ये (मोहम्मद ﷺ) मगर तुम्हारी ही तरह के एक इन्सान।"

रसूल अल्लाह से कलामुल्लाह सुन कर अगर इनका कोई साथी मुतास्सिर होता तो उसे अलग ले जाकर बड़े नासिहाना अंदाज़ में समझाते कि अरे तुम

ख्वाह-म-ख्वाह अपने जैसे एक इन्सान को अल्लाह का रसूल और उसकी बातों को अल्लाह का कलाम समझ रहे हो। इसकी बातों पर संजीदगी से गौर करने की ज़रूरत नहीं है।

اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ Æ

"तो क्या तुम जानते-बूझते जादू में पड़ने जा रहे हो?"

तुम जानते भी हो कि ये कलाम वगैरह सब जादू का कमाल है। तो क्या तुम जानते-बूझते हुए इसका शिकार होने जा रहे हो? उनकी इस तरह की सरगर्मियों की खबरें हुज़ूर तक भी पहुँचती थीं। आपको यक़ीनन इससे बहुत सदमा पहुँचता होगा कि अगर कोई अल्लाह का बंदा हिदायत क़ुबूल करने पर आमादा हुआ था तो उसको फ़िर वरगला कर भटका दिया गया है। चुनाँचे आप उनके आपस के शैतानी मशवरों का सुनते तो यूँ फ़रमाते:

आयत 4

قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۡ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ Ć

"रसूल ने कहा कि मेरा रब जानता है हर उस बात को जो आसमान और ज़मीन में है, और वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है।"

आयत 5

بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ

"बल्कि वह ये भी कहते हैं कि यह (कलाम) परेशान ख्यालात हैं"

कभी वह कहते कि ये अल्लाह का कलाम तो हरगिज़ नहीं है, बल्कि मोहम्मद () सोते में ख़्वाब देखते हैं और उन ख़्वाबों के परागंदह ख्यालात पर मब्नी बातें लोगों को सुनाते रहते हैं।

بَلِ افْتَرٰىهُ

"बल्कि इसने खुद घड लिया है"

कभी कहते कि ये कलाम तो खुद इनका अपना घड़ा हुआ है मगर ये ग़लत तौर पर इसे अल्लाह की तरफ़ मंसूब कर देते हैं।

بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ښ

"बल्कि ये तो शायर हैं।"

कभी कहते कि खुदादाद शायराना सलाहियत की बिना पर इन पर आमद होती है और यूँ ये कलाम तरतीब पाता है।

فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ Ĉ

"तो उसे चाहिये कि वह लाए हमारे पास कोई मौज्जज़ा जैसे (मौज्ज़ात के साथ) पहले रसूलों को भेजा गया था।"

और कभी कहते कि अगर ये वाक़िअतन अल्लाह के रसूल हैं तो फ़िर पहले रसूलों की तरह हमें कोई मौज्जज़ा दिखाएँ।

आयत 6

مَآ اٰمَنَتۡ قَبۡلَهُمۡ مِّنۡ قَرۡيَةٍ اَهۡلَكۡنٰهَا ۚ

"नहीं ईमान लाई कोई बस्ती इनसे पहले जिसको हमने हलाक किया।"

इनसे पहले बहुत से रसूलों को हिस्सी मौज्ज़ात दिये गए थे जो उन्होंने अपनी क़ौमों को दिखाए, मगर उनमें से कोई एक क़ौम या कोई एक बस्ती भी ऐसी नहीं थी जो उन मौज्ज़ात को देख कर ईमान लाई हो। चुनाँचे वह लोग वाज़ेह मौज्ज़ात को देख कर भी ईमान ना लाए और आख़िरकार हलाकत ही उनका मुक़द्दर बनी।

اَفَهُمۡ يُؤۡمِنُوۡنَ ۝

"तो क्या ये लोग (कोई मौज्ज़ा देख कर) ईमान ले आएँगे?"

आयत 7

وَمَآ اَرۡسَلۡنَا قَبۡلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوۡحِىۡۤ اِلَيۡهِمۡ فَسۡـَٔـلُوۡۤا اَهۡلَ الذِّكۡرِ اِنۡ كُنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ۝

"और (ऐ नबी ﷺ!) हमने नहीं भेजा आपसे पहले मगर मर्दों ही को (बतौर रसूल), उनकी तरफ़ हम वही करते थे, तो (ऐ क़ुरैश मक्का!) तुम अहले ज़िक्र से पूछ लो अगर तुम्हें मालूम नहीं।"

आयत के पहले हिस्से में ख़िताब रसूल अल्लाह से है, मगर बाद में ख़िताब का रुख उन लोगों की तरफ़ हो गया है जो कहते थे कि ये तो हमारी तरह के इन्सान हैं, हम इनकी बात कैसे मान ले? उन लोगों से कहा जा रहा है कि ये कोई पहले रसूल नहीं हैं। आपसे पहले भी बहुत से रसूल आए, वह सब भी इन्सान ही थे। वह इन्सानों ही की तरह पैदा हुए (सिवाय हज़रत ईसा अलै. के कि वह बगैर बाप के पैदा हुए)। वह इन्सानों ही की तरह खाते-पीते और दूसरी ज़रुरियाते ज़िंदगी पूरी करते थे। ये बात अगर तुम्हारी समझ से बालातर है तो तुम्हारे इर्द-गिर्द अहले किताब यानि यहूद और नसारा मौजूद हैं। तुम लोग उनसे पूछ लो कि पहले रसूल इन्सान थे या वह किसी माफ़ूक़ अल फ़ितरत मख्लूक़ से ताल्लुक़ रखते थे?

आयत 8

وَمَا جَعَلۡنٰهُمۡ جَسَدًا لَّا يَاۡكُلُوۡنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوۡا خٰلِدِيۡنَ ۝

"हमने उन (रसूलों) के लिये ऐसा जिस्म नहीं बनाया था कि वह खाना ना खाते हों और ना ही वह हमेशा (ज़िन्दा) रहने वाले होते थे।"

पहले जो अम्बिया आए थे वह सब आम इन्सानों की तरह खाते-पीते थे और उनमें से कोई भी अब्दी ज़िंदगी लेकर नहीं आया था। चुनाँचे उनमें से हर एक पर मौत का मरहला भी आया।

आयत 9

ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ

"फ़िर हमने उनके साथ किया गया वादा सच कर दिखाया, फिर उन्हें और (उनके साथ) जिसे चाहा उसे निजात दी"

हमने नूह अलै. और उनके मानने वालों को सैलाब की आफ़त से महफ़ूज़ रखा। हूद अलै. और उनके पैरोकारों को अमान बख्शी। सालेह अलै. और उन पर ईमान लाने वालों को निजात दी। शोएब अलै. और उनके साथियों को बचाया। लूत अलै. और उनकी बेटियों को मगज़ूब व मअतूब बस्तियों से ब-हिफ़ाज़त निकाला और मूसा अलै. के साथ बनी इसराइल को समुन्दर में से बच निकलने का रास्ता दिया। यूँ हमने हर मरतबा अपने रसूलों और अहले ईमान के साथ किये गए वादे को निभाया।

وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ۝D

"और हद से बढ़ने वालों को हमने हलाक कर दिया।"

आयत 10

لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝10

"(ऐ लोगों!) अब हमने तुम्हारी तरफ़ ये किताब नाज़िल कर दी है, इसमें तुम्हारा ज़िक्र है। तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?"

यहाँ "ذِكْرُكُمْ" के दो तर्जुमे हो सकते हैं, एक तो ये कि इसमें तुम्हारे हिस्से की नसीहत और तालीम है (यानि ज़िक्रुन लकुम) और दूसरा ये कि "इसमें तुम्हारा अपना ज़िक्र भी मौजूद है।" इस दूसरे मफ़हूम की वज़ाहत एक हदीस से मिलती है, जिसके रावी हज़रत अली रज़ि. हैं। आप फ़रमाते है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: ((أَلَا إِنَّهَا سَتَكُونُ فِتْنَةٌ)) "आगाह हो जाओ! अनक़रीब एक बहुत बड़ा फ़ितना रूनुमा होगा" فَقُلْتُ: مَا الْمَخْرَجُ مِنْهَا يَا رَسُوْلَ اللهِ ؟ "तो मैंने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ उससे निकलने का रास्ता कौनसा होगा?" यानि उस फ़ितने से बचने की सबील क्या होगी? आप ﷺ ने फ़रमाया: ((كِتَابِ اللهِ، فِيْهِ نَبَأُ مَا كَانَ قَبْلَكُمْ وَخَبَرُ مَا بَعْدَكُمْ وَحُكْمُ مَا بَيْنَكُمْ))[2] "अल्लाह की किताब! इसमें तुमसे पहले लोगों की ख़बरें भी हैं, तुम्हारे बाद आने वालों के अहवाल भी हैं और तुम्हारे बाहमी मसाइल व इख्तालाफ़ात का हल भी है।" इन मायने में यहाँ ज़िक्रुकुम से मुराद यही है कि तुम्हारे हर दौर के तमाम मसाइल का हल इस किताब के अन्दर मौजूद है। मैं अपने ज़ाती तजुर्बे की बुनियाद पर कह सकता हूँ कि आज भी हमें हर क़िस्म की सूरते हाल में क़ुरान मजीद से रहनुमाई मिल सकती है।

आयात 11 से 15 तक

وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝11 فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ۝12 لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ــ13 قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ــ14 فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ــ15

आयात 11

وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً

"और कितनी ही बस्तियों को हमने पीस डाला जो ज़ालिम थीं"

उनके वासी गुनाहगार, सरकश और नाफ़रमान थे। चुनाँचे उन्हें सज़ा के तौर पर नेस्तो-नाबूद कर दिया गया।

وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿11﴾

"और फ़िर उनके बाद हमने उठा खड़ा किया दूसरी क़ौमों को।"

जैसे क़ौमे नूह के बाद क़ौमे आद को मौक़ा मिला और क़ौमे आद के बाद क़ौमे समूद ने उरूज पाया और इसी तरह ये सिलसिला आगे चलता रहा।

आयत 12

فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ

"फ़िर जब उन्हें महसूस हुआ हमारा अज़ाब"

जब अज़ाब के आसार ज़ाहिर होना शुरू हो गए और उन्हें अहसास हो गया कि अब वाक़ेई अज़ाब आने वाला है तो:

اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ﴿12﴾

"तो उससे भागने लगे।"

आयत 13

لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿13﴾

"(उस वक़्त उन्हें कहा गया) अब भागो मत और वापस जाओ अपने सामान-ए-तअय्यश और महलात की तरफ़, शायद कि वहाँ तुम्हें पूछा जाए।"

शायद वहाँ तुम्हें अपना कोई पुरसाने हाल या खबरगीरी करने वाला मिल जाए।

आयत 14

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿14﴾

"उन्होंने कहा: हाय हमारी शामत! हम तो खुद ही ज़ालिम थे।"

चूँकि उस वक़्त तक हक़ीक़त उन पर मुन्कशिफ़ हो चुकी थी इसलिये उन्होंने बड़ी हसरत से ऐतराफ़ किया कि हक़ को झुठला कर और अल्लाह तआला की नाफ़रमानियों का इरतकाब करके उन्होंने खुद ही अपनी जानों पर सितम ढ़हाया था।

आयत 15

فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ــ15

"फ़िर वह बार-बार यही कहते रहे, यहाँ तक कि हमने कर दिया उन्हें कटी हुई खेती और राख की मानिन्द।"

حَصِيْد के मायने कटी हुई खेती के हैं, जबकि خٰمِدِيْنَ से मुराद ये है कि वह बुझी हुई आग की तरह हो गए। यानि उनकी आबादियाँ ऐसी वीरान हुईं कि ज़िंदगी की कोई रमक़ वहाँ नज़र ना आती थी।

आयात 16 से 29 तक

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ــ16 لَوْ اَرَدْنٰٓا اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ــ17 بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۭ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ــ18 وَ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَ مَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَ لَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ۚ ــ19 يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ــ20 اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ــ21 لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ــ22 لَا يُسْـَٔـلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔـلُوْنَ ــ23 اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۭ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ــ24 وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ــ25 وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ۭ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ۙ ــ26 لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ــ27 يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ــ28 وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّىْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ــ29

आयत 16

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ــ16

"और हमने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ उन दोनों के माबैन है, खेल की लिये नहीं बनाया है।"

यानि हमने ये दुनिया खेल-तमाशे और शुगल के लिये नहीं बनाई है। हमारी हर तख्लीक़ बा-मक़सद और अटल क़वानीन पर मब्नी है। इसी तरह दुनिया में क़ौमों के उरूज व ज़वाल के बारे में भी "सुन्नतुल्लाह" और क़वाइद व ज़वाबित बिल्कुल गैर मुबद्दल और ना-क़ाबिल-ए-तगय्युर हैं।

आयत 17

لَوْ اَرَدْنٰٓا اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ــ17

"अगर हम चाहते कि कोई खेल बनाये तो वह ज़रूर हम अपने पास से बना लेते, अगर हम यह करने वाले ही होते।"

आयत 18

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۭ

"बल्कि हम हक़ को दे मारते हैं बातिल पर तो वह उसका भेजा निकाल देता है, तो जब ही वह नाबूद हो जाता है।"

यह तारीख-ए-इंसानी का क़ुरानी फ़लसफ़ा है। दूसरी तरफ़ एक नज़रिया स्पेंग्लर का भी है। उसका कहना है कि क़ौमों की ज़िन्दगी एक फ़र्द की ज़िन्दगी से मुशाबेह है। जिस तरह एक बच्चा पैदा होता है, बचपन गुज़ारता है, जवानी को पहुँचता है, बूढा होता है और फिर मर जाता है, ऐसे ही दुनिया में क़ौमें और उनकी तहज़ीबें पैदा होती हैं, तरक्क़ी करती हैं, बाम-ए-उरूज पर पहुँचती हैं, और फिर कमज़ोरियों और खराबियों के बाइस ज़वाल पज़ीर होकर ख़त्म हो जाती हैं। इस ज़िमन में कार्ल मार्क्स ने जो Dialectical

Materialism का नज़रिया (वज़ाहत के लिये मुलाहिज़ा हो अल रअद:17 की तशरीह) पेश किया है, वह भी अपनी जगह अहम है।

बहरहाल आयत ज़ेरे नज़र में जो फ़लसफ़ा दिया गया है उसके मुताबिक़ दुनिया में हक़ व बातिल की कशमकश मुसलसल जारी है। एक तरफ़ इब्लीस, उसकी नस्ल और उसके एजेंट हैं, जबकि दूसरी तरफ़ अल्लाह तआला के नेक बन्दे, अंबिया व रुसुल, सिद्दिक़ीन, शुहदाअ और मोमिनीन सादिक़ीन हैं। क़ुरान के इस फ़लसफ़े को इक़बाल ने इस तरह बयान किया है:

सतीज़ाह कार रहा है अज़ल से ता अमरोज़
चिराग-ए-मुस्तफ़वी से शरार बू-लहबी

मशीयत-ए-इलाही से कभी-कभी ये कशमकश धमाका खेज़ होकर बाक़ायदा एक मअरके की शक्ल इख्तियार कर लेती है। ऐसे मौक़ों पर अल्लाह तआला तालिबान-ए-हक़ की मदद करता है और उनकी ताक़त के ज़रिये बातिल को कुचल कर रख देता है।

हक़ व बातिल का ऐसा ही एक बहुत ख़ौफ़नाक मअरका क़ुर्बे क़यामत के ज़माने में होने वाला है। ये जंगों का एक तवील सिलसिला होगा जिसको इसाई रिवायात में Armageddon जबकि अहादीस में "अल मलहमतुल उज़मा" का नाम दिया गया है। आलमा इक़बाल ने मुस्तक़बिल के इस मअरके का नक़्शा इन अल्फ़ाज़ में खींचा है:

दुनिया को है फिर मअरका-ए-रूह-ओ-बदन पेश
तहज़ीब ने फिर अपने दरिंदों को उभारा
अल्लाह को पा-मर्दी-ए-मोमिन पे भरोसा
इब्लीस को यूरोप की मशीनों का सहारा

यहाँ अल्लामा इक़बाल ने लफ्ज़ "तहज़ीब" के ज़रिये उसी मख्सूस ज़हनियत और सोच की तरफ़ इशारा किया है जिसके तहत फ़िरऔन ने अपने अवाम को "तरीक़तकुमुल मुसला" के नाम पर हज़रत मूसा अलै. के ख़िलाफ़ उभारने की कोशिश की थी कि इस वक़्त तुम्हारे मिसाली तहज़ीब व तमद्दुन को बड़ा खतरा दर पेश है। बहरहाल अल्लाह तआला को जब भी मंज़ूर होता है कोई तहरीक या कोई जमियत हक़ की अलंबरदार बन कर खड़ी हो जाती है और बातिल उससे टकरा कर पाश-पाश हो जाता है। अल्लामा इक़बाल के अल्फ़ाज़ में ऐसी ही क़ौम या जमात अल्लाह के दस्त क़ुदरत की वह तलवार है जिससे वह बातिल का क़िला क़मअ करता है:

सूरत-ए-शमशीर है दस्त-ए-क़ज़ा में वह क़ौम
करती है जो हर ज़मां अपने अमल का हिसाब!

लेकिन यह मक़ामे रफ़ीअ सिर्फ़ वही क़ौम हासिल कर सकती है जो क़दम-क़दम पर खुद अपना एहतेसाब करने की पॉलिसी पर अमल पैरा हो।

وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُونَ ـــ18

"और तुम्हारे लिये तबाही है उसकी वजह से जो तुम लोग बयान कर रहे हो।"

आयत 19

وَ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

"और उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है।"

وَ مَنۡ عِنۡدَهٗ لَا يَسۡتَكۡبِرُوۡنَ عَنۡ عِبَادَتِهٖ وَ لَا يَسۡتَحۡسِرُوۡنَ ۚ﴿19﴾

"और जो (मलाइका मुक़र्रबीन) उसके पास हैं वह उसकी इबादत से तकब्बुर (की बिना पर गुरेज़) नहीं करते और ना ही वह सुस्ती करते हैं।"

आयत 20

يُسَبِّحُوۡنَ الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفۡتُرُوۡنَ ﴿20﴾

"वह रात-दिन (इस तरह उसकी) तस्बीह में लगे हुए हैं कि थकते नहीं हैं।"

आयत 21

اَمِ اتَّخَذُوۡۤا اٰلِهَةً مِّنَ الۡاَرۡضِ هُمۡ يُنۡشِرُوۡنَ ﴿21﴾

"क्या इन्होंने ज़मीन में कुछ ऐसे मअबूद बना लिये हैं जो नशो-नुमा देते हैं?"

क्या इनका ख्याल है कि वह इन बातिल मअबूदों की नज़र-ए-करम से दुनिया में ख़ूब फले-फूलेंगे और तरक्क़ी की आला मनाज़िल तय कर लेंगे?

आयत 22

لَوۡ كَانَ فِيۡهِمَاۤ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ

"अगर इन दोनों (ज़मीन व आसमान) के अन्दर अल्लाह के सिवा कोई और मअबूद भी होते तो लाज़िमन ये दोनों फ़साद से भर जाते।"

इस कायनात का नज़्म व ज़ब्त ज़बाने हाल से गवाही दे रहा है कि यह एक वहदत (Unitary System) है। इसका मुदब्बिर व मुन्तज़िम एक ही है और इसके इंतेज़ाम में एक से ज़्यादा आराअ की तामील व तन्फ़ीज़ का कोई इम्कान नहीं है। जैसा कि सूरह बनी इसराइल (आयत 42) में फ़रमाया गया: {قُلۡ لَّوۡ كَانَ مَعَهٗۤ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوۡلُوۡنَ اِذًا لَّابۡتَغَوۡا اِلٰى ذِى الۡعَرۡشِ سَبِيۡلًا} "आप (इनसे) कहिये कि अगर अल्लाह के साथ दूसरे मअबूद होते जैसा कि ये कहते हैं तब तो वह ज़रूर तलाश करते साहिबे अर्श की तरफ़ कोई रास्ता।" इससे यह दलील भी निकलती है कि कोई भी इदारा ख्वाह छोटा हो या बड़ा उसका सरबराह एक ही होना चाहिये और अगर किसी इदारे के एक से ज़्यादा सरबराह होंगे तो उसका नज़्म व नस्क़ तबाह हो जाएगा। यही मिसाल मर्द की क़व्वामियत की दलील भी है। ज़ाहिर है कि ख़ानदान जैसा अहम और हस्सास इदारा एक जैसे इख्तियारात के हामिल दो सरबराहों का मुतहम्मिल नहीं हो सकता। और जब यह साबित हो गया कि सरबराह एक ही होना चाहिये तो फिर इसका ज़्यादा हक़दार मर्द ही है, क्योंकि क़ुरान के फ़रमान के मुताबिक़ मर्द ही "क़व्वाम" है: {اَلرِّجَالُ قَوَّامُوۡنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعۡضَهُمۡ عَلٰى بَعۡضٍ وَّبِمَاۤ اَنۡفَقُوۡا مِنۡ اَمۡوَالِهِمۡ } (सूरह निसा:34) "मर्द हाकिम हैं औरतों पर इस बिना पर कि अल्लाह ने इनमें से बाज़ को बाज़ पर फज़ीलत दी है और इसलिये भी कि वह अपना माल ख़र्च करते हैं।"

हमारे यहाँ मुल्की सतह पर ज़्यादातर इन्तेज़ामी मसाइल पार्लियामानी निज़ामे हुकूमत में इख्तियारात की सानवियत (duality) की वजह से पैदा होते हैं। इस निज़ाम में सरबराहे ममलिकत और सरबराहे हुकूमत के औहदे अलग-अलग हैं। इन दो औहदों के दरमियान इख्तियारात की तक़सीम उसूली तौर पर मुम्किन ही नहीं। चुनाँचे अगर वज़ीरे आज़म बा-इख्तियार होगा तो सदर के औहदे की हैसियत लाज़मी तौर पर नुमाइशी होगी और अगर सदर फ़आल होगा तो वज़ीरे आज़म कठपुतली बन कर रह जाएगा। इसके मुक़ाबले में सदारती निज़ाम मन्तक़ी और तौहीदी निज़ाम है जिसमें एक ही शख्सियत सरबराहे ममलिकत भी है और सरबराहे हुकूमत भी।

"तो अल्लाह जो अर्श का मालिक है वह उन बातों से पाक है जो ये लोग बनाते हैं।"

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ــ22

आयत 23

"वह जो कुछ करता है उससे जवाब देही नहीं हो सकती और इन सबकी जवाब देही होगी।"

لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ــ23

आयत 24

"क्या इन्होंने उसके सिवा दूसरे मअबूद बना लिये हैं?"

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۭ

"आप कहिये कि लाओ अपनी दलील!"

قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ

"ये (क़ुरान) ज़िक्र है इन लोगों का भी जो मेरे साथ हैं और उनका भी जो मुझसे पहले थे।"

هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ۭ

"बल्कि इनमें से अक्सर लोग हक़ को नहीं पहचानते, इसलिये वह ऐराज़ कर रहे हैं।"

بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ــ24

आयत 25

"और हमने आपसे पहले कोई रसूल नहीं भेजा मगर उसकी तरफ़ यही वही करते थे कि मेरे सिवा कोई मअबूद नहीं, पस मेरी ही बंदगी करो।"

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ــ25

आयत 26

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ۙ﴿26﴾

"और इन्होंने कहा कि रहमान ने (किसी को अपना) बेटा बना लिया। वह पाक है (इससे), बल्कि वह उसके मुक्करम बन्दे हैं।"

जिस किसी को भी ये लोग अल्लाह की औलाद क़रार देते हैं, वह फ़रिश्ते हों, अम्बिया हों या औलिया अल्लाह, सब उसके मुक़र्रब बन्दे हैं। अल्लाह तआला ने उन्हें अपने बन्दों की हैसियत से अपने यहाँ बा-इज्ज़त मक़ाम अता किया है: {اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ} (सूरह युनुस:2) "यक़ीनन उनके लिये है सच्चाई का मरतबा उनके रब के पास।"

आयत 27

لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿27﴾

"वह सबक़त नहीं करते उससे बात में, और वह उसके हुक्म ही की तामील करते हैं।"

फ़रिश्ते अल्लाह तआला के आगे बढ़ कर बात नहीं करते। वह अल्लाह के अहकाम के मुन्तज़िर रहते हैं और उसके हर फ़रमान की तामील करते हैं।

आयत 28

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ

"वह जानता है जो कुछ उनके सामने है और जो कुछ उनके पीछे है"

وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿28﴾

"और वह शफ़ाअत नहीं करेंगे सिवाय उसके जिसके लिये वह राज़ी होगा, और वह तो खुद उसके खौफ़ से लरज़ा व तरसाँ रहते हैं।"

आयत 29

وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْۤ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ؕ

"और जो कोई भी (बिल फ़र्ज़) उनमें से कहे कि मैं इलाह हूँ अल्लाह के सिवा, तो उसे हम बदला देंगे जहन्नम का।"

كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿29﴾

"इसी तरह हम बदला देते हैं जालिमों को।"

आयात 30 से 41 तक

اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ؕ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ؕ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿30﴾ وَجَعَلْنَا فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ ۪ وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿31﴾ وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا ۚ وَّهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿32﴾ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿33﴾ وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ؕ اَفَاۡئِنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ﴿34﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَنَبْلُوْكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ؕ وَاِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿35﴾ وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿36﴾ خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ؕ سَاُورِيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿37﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ

38 لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ 39 بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ 40 وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ 41

आयत 30

اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ۭ

"क्या देखा नहीं इन काफ़िरों ने कि आसमान और ज़मीन बंद थे फिर हमने इनको खोल दिया!"

यानि शदीद गरमी और हबस की सूरतेहाल जिसमें लोगों की जान पर बनी हुई होती है। इस कैफ़ियत में बज़ाहिर यूँ महसूस होता है कि आसमान के दरवाज़े भी बंद हैं, ज़मीन के सोते भी खुश्क हैं, बारिश का दूर-दूर तक कोई इम्कान नहीं, हर तरफ़ खुश्कसाली का राज है और फिर यकायक अल्लाह की रहमत से ये सूरतेहाल तब्दील हो जाती है। आसमान के दहाने खुल जाते हैं और बारिश के पानी से ज़मीन पर नबाताती और हैवानाती ज़िंदगी की चहल-पहल शुरू हो जाती है।

इसके अलावा इस आयत में ये इशारा भी मिलता है कि बिग बैंग के बाद माद्दे का जो एक बहुत बड़ा गोला वजूद में आया तो वह एक यक्जा वजूद (Homogenous Mass) की सूरत में था। फिर माद्दे के इस गोले में तक़सीम हुई, मुख्तलिफ़ सितारों और सय्यारों के गुच्छे बने, कहकशायें (Galaxies) वजूद में आईं, सूरज और उसके सय्यारों की तख्लीक़ हुई, और यूँ हमारी ज़मीन भी पैदा हुई। गोया इस सारे तख्लीक़ी अमल का इज़हार इस एक फिक़रे में हो गया कि आसमान और ज़मीन बंद थे, यानि बाहम मिले हुए थे और हमने इन्हें खोल दिया, जुदा कर दिया।

وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاۗءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۭ

"और हमने पानी से हर जानदार शय को बनाया!"

यहाँ पर "खलक़ना" के बजाय "ज'अलना" फ़रमाया। ज़मीन के ऊपर ज़िंदगी जिस किसी शक्ल के भी है, चाहे वह नबाताती हयात हो या हैवानी, हर जानदार चीज़ का माद्दा-ए-तख्लीक़ मिट्टी और मब्दा-ए-हयात पानी है। मिट्टी (तुराब) और पानी मिल कर गारा (तीन) बना। फिर ये तीन लाज़ब में तब्दील हुआ। फिर इसने हमाइन मस्नून की शक्ल इख्तियार की। इसके बाद सल्सालिम मिन हमाइन मस्नून का मरहला आया। फिर सल्सालिन कलफ़ख्खार बना। (इस सिलसिले में सूरतुल हिज्र, आयत 26 की की तशरीह भी मद्देनज़र रहे)। गोया मिट्टी से हर जानदार चीज़ की तख्लीक़ हुई और इन सबकी ज़िंदगी का दारोमदार पानी पर रखा गया। चुनाँचे हर जानदार के लिये मब्दा-ए-हयात पानी है।

اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ 30

"तो क्या (ये सब कुछ जान लेने के बाद भी) ये लोग ईमान नहीं लाएँगे?"

आयत 31

وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِهِمْ

"और हमने ज़मीन में मज़बूत पहाड़ जमा दिये ताकि वह इन्हें लेकर (एक तरफ़) झुक ना जाए"

وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ــ31

"और हमने इसके अन्दर बड़े कुशादाह रास्ते बनाए ताकि ये लोग राहयाब हों।"

मैदानी रास्तों के अलावा बड़े-बड़े पहाड़ी सिलसिलों के अन्दर भी क़ुदरती रास्ते रखे और वादियाँ बनाईं ताकि ऐसे इलाक़ो में भी लोगों के लिये सफ़र करना मुम्किन हो सके।

आयत 32

وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَّحْفُوظًا ۖ وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ــ32

"और हमने आसमान को एक महफ़ूज़ छत बना दिया, लेकिन ये लोग इस (आसमान) की निशानियों को ध्यान में नहीं लाते।"

इससे पहले ये मज़मून सूरतुल हिज्र (आयात 16-17) में इस तरह बयान हुआ है: {وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ} {وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ} "और हमने आसमान में बुर्ज बनाए हैं और इसे मुज़य्यन कर दिया है देखने वालों के लिये और हमने हिफ़ाज़त की है इसकी हर शैतान मरदूद से।" यानि आसमाने दुनिया पर जो सितारे हैं वह बाइसे ज़ीनत भी हैं, लेकिन दूसरी तरफ़ ये श्यातीने जिन्न के लिये मिज़ाइल सेन्टर भी हैं। इनमें से जो कोई भी अपनी हुदूद से तज़ावुज़ करके गैब की खबरों की टोह में आलम-ए-बाला की तरफ़ जाने की कोशिश करता है उस पर शहाबे साक़िब की शक्ल में मिज़ाइल दागा जाता है और यूँ इन श्यातीन की पहुँच के हवाले से आसमान को سَقْفًا مَّحْفُوظًا का दर्जा दे दिया गया है।

अब तक की साइन्सी तहक़ीक़ात के हवाले से سَقْفًا مَّحْفُوظًا के दो पहलु और भी हैं। इनमें से एक तो O-Zone Layer की फ़राहम कर्दा हिफ़ाज़ती छतरी है जिसने पूरे कुर्रा-ए-अर्ज़ को ढाँप रखा है और यूँ सूरज से निकलने वाली तमाम मज़र शआओं को ज़मीन तक आने से रोकने के लिये ये फ़िल्टर का काम करती है (माहौलयाती साइन्स के माहिरीन आज-कल इसके बारे में बहुत फ़िक्रमंद हैं कि मुख्तलिफ़ इंसानी सरगर्मियों की वजह से इसे नुक़सान पहुँच रहा है और ये बतदरीज कमज़ोर होती जा रही है)। इसके साथ-साथ हमारी फ़ज़ा (ज़मीन के ऊपर कुर्रा-ए-हवाई) भी हिफ़ाज़ती छत का काम देती है। ख़ला में तैरने वाले छोटी-बडी जसामतों के बेशुमार पत्थर (ये पत्थर या पत्थर नुमा ठोस अज्साम मुख्तलिफ़ सितारों या सय्यारों में होने वाली टूट-फूट के नतीजे में हर वक़्त ख़ला में बिखरे रहते हैं) जब कुर्रा-ए-हवाई में दाख़िल होते हैं तो अपनी तेज़ रफ़्तारी के सबब हवा की रगड़ से जल कर फ़ज़ा में ही तहलील (dissolved) हो जाते हैं और यूँ ज़मीन इनके नुक़सानात से महफ़ूज़ रहती है।

आयत 33

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ

"और वही है जिसने पैदा किया रात, दिन सूरज और चाँद को।"

كُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ؀33

"ये सबके सब अपने-अपने मदार में तैर रहे हैं।"

आयत 34

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۭ

"और (ऐ नबी ﷺ!) आपसे पहले हमने किसी इंसान के लिये दवाम नहीं रखा।"

اَفَاۗىِٕنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ؀34

"तो अगर आप फौत हो गए तो ये लोग क्या हमेशा रहेंगे?"

आप ﷺ के ये मुखालफ़ीन अबु जहल, अबु लहब वगैरह हमेशा की ज़िंदगियाँ लेकर तो नहीं आए। इन सबको एक दिन मरना है और हमारे सामने पेश होना है।

आयत 35

كُلُّ نَفْسٍ ذَاۗىِٕقَةُ الْمَوْتِ ۭ

"हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है।"

وَنَبْلُوْكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۭ

"और हम आज़माते रहते हैं तुम लोगों को शर और खैर के ज़रिये से।"

इस दुनिया में तुम्हारी आज़माइश के लिये तुम लोगों को हम मुख्तलिफ़ क़िस्म की कैफ़ियात से दो-चार करते रहते हैं। खैर व शर और खुशी व गम के बारे में तुम लोगों के अपने पैमाने और अपने मैयारात हैं और इसी मुनास्बत से उनकी कैफ़ियात के बारे में तुम्हारे मनफ़ी या मुस्बत तास्सुरात होते हैं, मगर ज़रूरी नहीं कि हक़ीक़त भी तुम्हारे ही तास्सुरात के मुताबिक़ हो। ये भी हो सकता है कि तुम लोग जिसे शर समझते हो वह हक़ीक़त में खैर हो और जो चीज़ तुम्हारे नुक्ता-ए-नज़र से खैर है वह असल में शर हो। बक़रह (आयत 216): { وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَـيْـــًٔـا وَّھُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تُحِبُّوْا شَـيْـــًٔـا وَّھُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ} "और हो सकता है कि तुम किसी शय को नापसंद करो और वह तुम्हारे लिये बेहतर हो। और हो सकता है कि तुम किसी चीज़ को पसंद करो दर हालाँकि वही तुम्हारे लिये बुरी हो। और अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते।" बहरहाल दुनिया में पेश आने वाले अच्छे-बुरे ये हालात तुम्हारी आज़माइश के लिये हैं।

وَاِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ؀35

"और तुम सब लोग हमारी ही तरफ़ लौटा दिये जाओगे।"

आयत 36

وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ۔

"और (ऐ नबी ﷺ!) ये काफ़िर लोग जब भी आपको देखते हैं तो आपका मज़ाक़ उड़ाते हैं।"

ये मुशरिकीन मुख्तलिफ़ अंदाज़ में आप पर इस्तेहज़ाइया फिक़रे कसते हैं, आपको देखते हैं तो एक-दूसरे से मुखातिब होकर इस तरह आपका तमस्खुर उड़ाते हैं:

اَهٰذَا الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ

"क्या यह है वह शख्स जो तुम्हारे मअबूदों का ज़िक्र करता है?"

यानि कहता है कि उनकी कोई हक़ीक़त नहीं। और इस तरह उनकी शान में गुस्ताख़ी का इरतकाब करता है!

وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ــ36

"और वह खुद रहमान के ज़िक्र से मुन्किर हैं।"

इन्हें तो अपने मअबूदों का ज़िक्र अच्छा लगता है। लात व उज्ज़ा का ज़िक्र हो तो ये लोग खुश होते हैं और अल्लाह तआला के ज़िक्र से इनके दिल बुझ जाते हैं।

आयत 37

خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۔

"इंसान बनाया गया है उज्लत से।"

यानि इंसान की खिल्क़त में उज्लत पसंदी रखी गई है। उज्लत पसंदी इंसान की सरश्त में दाख़िल है। इस हवाले से ये नुक्ता अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि इंसान की ज़ात या शख्सियत के दो हिस्से हैं। एक हिस्सा माद्दी, जिस्मानी या हैवानी है जिसकी तख्लीक़ ज़मीन यानि मिट्टी से हुई है। इस माद्दी वजूद में बहुत सी कमज़ोरियाँ और कोताहियाँ रखी गई हैं। सूरतुन्निसा (आयत 28) के ये अल्फ़ाज़ इस हक़ीक़त पर शाहिद हैं: {وَخُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا} कि बुनियादी तौर पर इंसान कमज़ोर और ज़ईफ़ पैदा किया गया है। इंसानी ज़ात का दूसरा पहलु रूहानी है। इंसानी रूह चूँकि नूर से पैदा की गई है इसलिये उसका ये पहलु बहुत बुलंद और अरफ़ा है। इसी पहलु के बारे में सूरतुत्तीन (आयत 4) में फ़रमाया गया है: {لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ} "हमने इंसान को बेहतरीन सूरत में पैदा किया है।" गोया असल इंसान तो वह रूह ही है जो इंसानी तख्लीक़ के मरहला-ए-अव्वल (वज़ाहत के लिये अनआम:94 की तशरीह मुलाहिज़ा हो) में اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ की कैफ़ियत में पैदा की गई। इस "नूर" को फिर उस इंसानी जिस्म के अन्दर रखा गया जो मिट्टी से बना है। और इसी वजह से इसमें बहुत सी कमज़ोरियाँ पाई जाती हैं जिनमें से एक कमज़ोरी ये भी है कि वह फ़ितरी और जबली तौर पर उज्लत पसंद है।

سَاُورِيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ۝37

"ज़ल्द ही मैं तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखा दूँगा, पस तुम लोग मुझसे जल्दी ना मचाओ।"

क्या अजब है कि तुम्हारे अज़ाब के बारे में वईदों के पूरा होने का वक़्त क़रीब ही आ लगा हो।

आयत 38

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝38

"और ये लोग कहते हैं कि ये वादा कब पूरा होगा अगर आप सच्चे हैं?"

इससे मुराद अज़ाब आने या मौज्ज़ा दिखाने का वादा है।

आयत 39

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ
وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝39

"काश! इन काफ़िरों को मालूम होता (उस वक़्त के बारे में) जब वह आग को हटा ना सकेंगे अपने चेहरों से और ना ही अपनी पीठों से, और ना ही इनकी मदद की जाएगी।"

आयत 40

بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ

"बल्कि वह (क़यामत) इन पर अचानक आएगी और इन्हें मबहूत कर देगी"

यानि इनके होश खो देगी। ये वही लफ्ज़ (बा-हा-ता) है जो अल बक़रह:258 में नमरूद के बारे में आया है: { فَبُهِتَ الَّذِيْ كَفَرَ ۭ } "तो (यह सुन कर) वह काफ़िर हक्का-बक्का रह गया।"

فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝40

"तो ना इनकी इस्तताअत होगी उस (क़यामत या अज़ाब) को टालने की और ना ही इन्हें कोई मोहलत मिलेगी।"

आयत 41

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ

"और (ऐ नबी ﷺ!) आपसे पहले जो रसूल आए थे उनका भी मज़ाक़ उड़ाया गया था"

लिहाज़ा आप इस सूरतेहाल को बर्दाश्त कीजिये और सब्र का दामन थाम कर अपना फ़र्ज़ अदा करते रहिये।

فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝41

"तो फिर घेर लिया उनमें से मज़ाक़ उड़ाने वालों को उसी (अज़ाब) ने जिसका वह मज़ाक़ उड़ाया करते थे।"

फिर जब अल्लाह तआला की मशीयत में मुताबिक़ अज़ाबे मौऊद (वादा किया हुआ अज़ाब) आया तो उन मज़ाक़ उड़ाने वालों को नेस्तो-नाबूद करके नस्यम-मन्सिया कर दिया कर दिया।

आयात 42 से 50 तक

قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ۭ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ــ42 اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ۭ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ــ43 بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَاۗءِ وَاٰبَاۗءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۭ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۭ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ــ44 قُلْ اِنَّمَآ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۣ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاۗءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ــ45 وَلَىِٕنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ــ46 وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْــــًٔا ۭ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ۭ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ــ47 وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَاۗءً وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙــ48 الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ــ49 وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ۭ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ــ50

आयत 42

قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ۭ

"आप इनसे पूछिये कि कौन तुम्हारी हिफ़ाज़त करता है रात-दिन रहमान की तरफ़ से?"

यानि अल्लाह तआला ही ने तुम्हारे लिये मुहाफ़िज़ (body guards) मुक़र्रर कर रखे हैं। ये मज़मून दो मरतबा इससे पहले भी आ चुका है। सूरतुल अनआम:61 में फ़रमाया गया: {وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً} कि वह फ़रिश्तों की सूरत में तुम्हारे लिये मुहाफ़िज़ मुक़र्रर करता है। सूरतुल रअद:11 में इरशाद हुआ: {لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ۭ} "इस (इंसान) के लिये बारी-बारी आने वाले (पहरेदार) हैं, वह इसके सामने और इसके पीछे से इसकी हिफ़ाज़त करते रहते हैं अल्लाह के हुक्म से।" मुराद यह है कि जब तक अल्लाह को मंज़ूर होता है वह मौत से या मसाइब व हादसात से ख़ुद इंसान की हिफ़ाज़त करता है।

بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ــ42

"बल्कि ये लोग अपने रब के ज़िक्र से ऐराज़ किये हुए हैं।"

आयत 43

اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ۭ

"क्या इनके ऐसे मअबूद हैं हमारे सिवा जो उनको बचाते हैं?"

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ــ43

"वह तो ख़ुद अपनी मदद भी नहीं कर सकते और ना ही वह हमारे मुक़ाबले में इनकी मसाहबत कर सकते हैं।"

यानि हमारे मुक़ाबले में इनके खुद-साख्ता मअबूदों की दोस्ती इनके किसी काम नहीं आ सकती।

आयत 44

بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَاۗءِ وَاٰبَاۗءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۭ

"लेकिन हमने (दुनियवी) नेअमतें अता कीं इन को भी और इनके आबा व अजदाद को भी, यहाँ तक कि उन पर एक मुद्दत गुज़र गई।"

हम उन्हें मुसलसल दुनियवी नेअमतों से नवाज़ते रहे, यहाँ तक कि वह उनके आदी हो गए, उन्हें अपनी मिल्कियत समझने लगे और उन पर ख़ूब इतराने लगे।

اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۭ

"क्या यह लोग देखते नहीं कि हम ज़मीन को इसके किनारों से घटाते चले आ रहे हैं?"

क्या मुशरिकीन मक्का को ये ठोस हक़ीक़त नज़र नहीं आ रही कि इस सरज़मीन में इनका असर व रसूख रोज़-ब-रोज़ कम हो रहा है। इस्लाम का पैग़ाम मुसलसल फ़ैल रहा है। मक्का के अन्दर से भी इस रौशनी का दायरा वसीअ हो रहा है और बाहर के क़बाइल में भी दावत-ए-इस्लाम का तआर्रुफ़ रफ़्ता-रफ़्ता बढ़ता चला जा रहा है। गोया मुशरिकीने मक्का के लिये ज़मीन मुसलसल सुकडती चली जा रही है और हर आने वाले दिन के साथ अहले ईमान की तादाद और ताक़त में इज़ाफ़ा हो रहा है। इनसे मिलते-जुलते अल्फ़ाज़ में ये मज़मून इससे पहले सूरतुल रअद (आयत 41) में भी आ चुका है: {اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۭ وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ۭ وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ} "क्या ये लोग देखते नहीं कि हम ज़मीन को घटाते चले आ रहे हैं इसके किनारों से? और अल्लाह ही फ़ैसला करने वाला है, कोई नहीं पीछे डालने वाला उसके हुक्म को, और वह जल्द हिसाब लेने वाला है।"

اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ـــ44

"तो क्या (अब भी वह समझते हैं कि) वही ग़ालिब आने वाले हैं?"

ये सब कुछ देखते हुए भी क्या उनका ख्याल है कि इस कशमकश में वही जीतेंगे:

आयत 45

قُلْ اِنَّمَآ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۡ

"आप कह दीजिये कि मैं तुम लोगों को ख़बरदार करता हूँ वही के ज़रिये से"

وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاۗءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ـــ45

"और बहरे नहीं सुनते किसी पुकार को जब उन्हें ख़बरदार किया जाता है।"

अगर आप एक बहरे को चिल्ला-चिल्ला कर ख़बरदार कर रहे हों कि तुम्हारे पीछे से एक शेर तुम पर हमलावर होने जा रहा है तो वह कहाँ ख़ुद को इस ख़तरे से बचाएगा। यही मिसाल इन मुन्करीन की है जो दावते हक़ की आवाज़ सुनने की सलाहियत से महरूम हो चुके हैं।

आयत 46

وَلَىِٕنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ـــ46

"और अगर इन्हें आपके रब के अज़ाब का एक भभका भी लग जाए तो फ़ौरन चीख उठेंगे कि हाय हमारी शामत, हम ही ज़ालिम थे।"

यही लोग जो अब अकड़-अकड़ कर बातें करते हैं और आप पर तंज़ व इस्तेहज़ाअ के तीर बरसाते हैं, अज़ाबे इलाही का एक झटका भी नहीं सह सकेंगे और दुहाई मचाना शुरू कर देंगे कि क़सूरवार हम ख़ुद ही थे।

आयत 47

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـــًٔا ۭ

"और हम क़यामत के दिन अद्ल व इन्साफ़ की मीज़ानें लाकर रख देंगे, फिर किसी जान पर कोई ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।"

وَ اِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ۭ

"अगर होगा कोई (अमल) राई के दाने के बराबर भी तो उसे हम ले आयेंगे।"

وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ــ47

"और हिसाब लेने के लिये हम काफ़ी हैं।"

इस सिलसिले में हमें किसी मददगार की ज़रूरत नहीं होगी।

आयत 48

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَاۗءً وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ ــ48

"और हमने मूसा अलै. और हारून अलै. को अता की थी फ़ुरक़ान (किताब), रौशनी और नसीहत मुत्तक़ीन के लिये।"

आयत 49

اَلَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ــ49

"जो डरते रहते हैं अपने रब से ग़ैब में (होने के बावजूद) और वह क़यामत (के तस्सवुर) से लरज़ा व तरसाँ रहते हैं।"

आयत 50

وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ۭ

"और अब ये बा-बरकत ज़िक्र (क़ुरान) हमने नाज़िल किया है।"

इससे पहले हमने तौरात नाज़िल की जो हक़ व बातिल के दरमियान फ़ैसला करने वाली थी, उसमें मोमिनीन मुत्तक़ीन के लिये रौशनी और नसीहत भी थी, और अब हमने अपना बा-बरकत क़लाम क़ुरान की सूरत में नाज़िल किया है।

اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ــ50

"तो क्या तुम इसका इन्कार कर रहे हो?"

आयात 51 से 75 तक

وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ۚ ــ51 اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ــ52 قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا
عٰبِدِيْنَ ــ53 قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ــ54 قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ــ55 قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ــ56 وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ــ57 فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا
لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ــ58 قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ــ59 قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ۚ ــ60 قَالُوْا فَاْتُوْا
بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ــ61 قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يّٰٓاِبْرٰهِيْمُ ۖ ــ62 قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا
يَنْطِقُوْنَ ــ63 فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۙ ــ64 ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ــ65 قَالَ
اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ۖ ــ66 اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۖ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ــ67 قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا
اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ــ68 قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ۙ ــ69 وَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ۚ ــ70 وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا اِلَى
الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ــ71 وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ ۭ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۭ وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ــ72 وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ
فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَاۗءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ــ73 وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰۗىِٕثَ ۭ
اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ۙ ــ74 وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ۭ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ــ75

आयत 51

وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ۚ ــ51

"और (मूसा अलै. से भी) पहले हमने इब्राहीम अलै. को उसकी सआदत की राह बख्शी थी और हम हर तरह से उसकी ख़बर रखते थे।"

इन आयात में बड़ी उम्दगी से हज़रत इब्राहीम अलै. और आपकी क़ौम के दरमियान होने वाली कशमकश की तफ़सील बयान हो रही है:

आयत 52

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ــ52

"जब इब्राहीम ने अपने वालिद और अपनी क़ौम से कहा कि ये क्या मूर्तियाँ हैं जिनके लिये तुम लोग ऐतकाफ़ किये रहते हो!"

ज़रा इन पत्थर की खुद तराशीदा मूर्तियों की असलियत और हक़ीक़त तो बयान करो जिनके तुम मुजावर बने बैठे हो और जिनके ज्ञान-ध्यान में लगे रहते हो!

आयत 53

قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ــ53

"उन्होंने जवाब दिया कि हमने अपने आबा व अजदाद को (इसी तरह से) इनकी इबादत करते पाया था।"

आयत 54

قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ــ54

"इब्राहीम ने कहा: फिर तो तुम भी और तुम्हारे आबा व अजदाद भी यक़ीनन खुली गुमराही में मुब्तला थे।"

आपने अलल ऐलान हक़ बात सबके सामने कह दी।

आयत 55

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ــ55

"वह कहने लगे कि क्या आप वाक़ई हमारे पास हक़ लाए हैं या महज़ शुगल कर रहे हैं?"

यानि क्या आप इस बात में वाक़ई संजीदा हैं और आपका ये दावा ठोस इल्मी हक़ाइक़ पर मब्नी है या वैसे ही तफ़रीह तबअ के लिये बातें बना रहे हैं?"

आयत 56

قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ

"इब्राहीम ने जवाब दिया कि नहीं, बल्कि फ़िल वाक़ेअ तुम्हारा रब वही है जो आसमानों और ज़मीन का रब है, जिसने इन्हें पैदा किया है"

وَاَنَا عَلٰي ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ــ56

"और मैं ख़ुद भी इस पर गवाह हूँ!"

हज़रत इब्राहीम अलै. ने जवाब दिया कि मैं आला वजह अलबसीरत ये बात कह रहा हूँ, मुझे इसमें ज़रा भी शक नहीं। हुज़ूर ﷺ को भी अपनी दावत के सिलसिले में बिल्कुल इसी तरह क़तई अल्फ़ाज़ में ऐलान करने का हुक्म दिया गया: { قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۷ عَلٰي بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ۭ } (युसुफ़:108) "(ऐ नबी ﷺ!) आप कह दीजिये कि ये मेरा रास्ता है, मैं अल्लाह की तरफ़ बुला रहा हूँ पूरी बसीरत के साथ, मैं खुद भी और वह भी जो मेरी पैरवी कर रहे हैं।"

आयत 57

وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ــ57

"और अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे इन बुतों के साथ ज़रूर कोई चाल चल के रहूँगा, जबकि तुम चले जाओगे पीठ मोड़ कर।"

जैसे हिन्दुओं के यहाँ जन्माष्टमी का मेला होता है ऐसे ही उन लोगों का भी कोई त्यौहार था जिसमें वह सब किसी खुले मैदान में जाकर पूजा-पाठ करते थे। जब वह दिन आया तो उनके छोटे-बड़े, मर्द-औरतें सब मुक़र्ररा मक़ाम पर चले गए। हज़रत इब्राहीम उनके साथ नहीं गए: {فَقَالَ اِنِّيْ سَقِيْمٌ} (साफ़्फ़ात:89) "उन्होंने कहा कि मेरी तबीयत नासाज़ है।" मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकता। चुनाँचे जब शहर खाली हो गया तो आप एक तैशा हाथ में लेकर उनके बुतखाने में घुस गए:

आयत 58

فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ــ58

"तो आपने उन सबको टुकड़े-टुकड़े कर दिया, सिवाय उनके बड़े के, शायद कि वह उसकी तरफ़ रुजूअ करें।"

आपने सबसे बड़े बुत को छोड़ कर बाक़ी तमाम बुतों को तहस-नहस करके रख दिया। इसके बाद आपने अपना तैशा भी उस बड़े बुत के कंधे पर रख दिया ताकि वह आकर देखें तो सबसे बड़ा बुत सही सालिम खड़ा हो, बाक़ी सबके सब तैशे के शिकार हुए पड़े हों, आला-ए-वारदात भी उसी बड़े के पास से बरामद हो और यूँ वाक़िआती शहादत (circumstancial evidence) की हद तक उसके ख़िलाफ़ इत्मामे हुज्जत भी हो जाए। चुनाँचे उन्होंने वापस आकर अपने बुतों का हाल देखा तो:

आयत 59

قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ــ59

"वह चिल्ला उठे: किसने किया है हमारे मअबूदों के साथ ये सब कुछ? वह तो यक़ीनन कोई बहुत ही ज़ालिम है!"

ज़रा तस्सवुर करें, आज अगर बनारस या मथुरा (भारत) में ऐसा कोई वाक़िया रूनुमा हो जाए तो कैसी क़यामत टूट पड़ेगी। ऐसे ही इस वाक़िये से शहर भर पर गोया क़यामत टूट पड़ी।

आयत 60

قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ۭ ــ60

"कुछ लोगों ने कहा कि हमने एक नौजवान को इनके बारे में (गलत) बातें करते सुना था, जिसे इब्राहीम कहा जाता है।"

इब्राहीम ही इनके बारे में ज़बान दराज़ी करता हुआ सुना गया था कि इनकी हक़ीक़त कुछ नहीं है, इन्हें ख्वाह-म-ख्वाह मअबूद बना लिया गया है, वगैरह-वगैरह। शायद उसी ने ये हरकत की हो!

आयत 61

قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓي اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ــ61

"लोगों ने कहा कि फिर लाओ उसको सबके सामने ताकि वह गवाही दें।"

ताकि जिन लोगों के सामने उसने गुस्ताखाना गुफ्तुगू की थी वह उसे पहचान कर गवाही दे सकें कि हाँ यही है वह शख्स जो हमारे मअबूदों के बारे में ऐसी-वैसी बातें करता था और जिसने क़सम खा कर कहा था कि मैं ज़रूर इनके साथ कुछ चाल चलूँगा। चुनाँचे जब आपको सामने लाकर तस्दीक़ कर ली गई तो:

आयत 62

قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ــ62

"उन्होंने पूछा: ऐ इब्राहीम! क्या हमारे मअबूदों के साथ ये सब कुछ तुमने किया है?"

आयत 63

قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ــ63

"आपने जवाब दिया: बल्कि ये इनके इस बड़े ने किया है, तुम पूछ देखो इनसे अगर ये बोलते हों।"

ये झूठ नहीं बल्कि "तौरिया" का एक अंदाज़ है। यानि हज़रत इब्राहीम अलै. ये नहीं समझते थे कि मेरी इस बात को वह लोग सच समझ लेंगे और वह लोग भी ख़ूब समझ रहे थे कि उनसे ऐसे क्यों कहा जा रहा है। बहरहाल आपका मक़सद उन्हें अपने गिरेबानों में झाँकने और सोचने पर मजबूर करना था।

आयत 64

فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۙ ــ64

"इस पर उन्होंने अपने अंदर ही अंदर सोचा और (खुद कलामी करते हुए) कहने लगे कि यक़ीनन तुम खुद ही ज़ालिम हो।"

ये गोया उनके ज़मीर की आवाज़ थी कि इब्राहीम की बात है तो दुरुस्त! ज़ालिम तो तुम ख़ुद हो जो इन बेजान मुजस्समों को मअबूद समझते हो, जो ख़ुद अपना दिफ़ा भी ना कर सके और अब ये बताने से भी माज़ूर हैं कि इनकी ये हालत किसने की है?

आयत 65

ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ

"फिर वह अपने सरों के बल औंधे कर दिये गए"

एक लम्हे के लिये दिलों में ये ख्याल तो आया कि इब्राहीम की बात दुरुस्त है और हम गलत हैं, मगर जाहिलाना हमियत व अस्बियत के हाथों उनकी अक़्लें फिर से औंधी हो गईं और फिर से वह उन बेजान बुतों का दिफ़ा करने की ठान कर बोले कि इनसे हम क्या पूछें:

لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ــ65

"तुम तो जानते हो कि ये बोल नहीं सकते!"

आयत 66

قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ۭ ــ66

"इब्राहीम ने कहा: तो क्या तुम लोग अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ों को पूजते हो जो ना तो तुम्हें कुछ नफ़ा दे सकती हैं

और ना ही तुम्हारा कुछ नुक़सान कर सकती हैं?"

आयत 67

أُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ــ67

"तुफ़्फ़ है तुम पर भी और इन पर भी जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़ कर पूजते हो। तो क्या तुम लोग अक़्ल से काम नहीं लेते?"

"आयत 68

قَالُوا حَرِّقُوهُ وَانْصُرُوا آلِهَتَكُمْ إِن كُنتُمْ فَاعِلِينَ ــ68

"उन्होंने कहा: जला डालो इसे, और मदद करो अपने मअबूदों की! अगर तुम्हें कुछ करना ही है।"

चुनाँचे उन्होंने आग का एक बहुत बड़ा अलाव तैयार किया और हज़रत इब्राहीम अलै. को उसमें डाल दिया।

आयत 69

قُلْنَا يَا نَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَامًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ــ69

"हमने हुक्म दिया कि ऐ आग! तू ठंडी हो जा और सलामती बन जा इब्राहीम पर।"

यहाँ ये नुक्ता ज़हनों में ताज़ा करने की ज़रूरत है कि फ़ितरत के क़वानीन अल्लाह तआला के बनाए हुए हैं और अल्लाह जब चाहे उन्हें तब्दील कर सकता है। अल्लाह तआला की मर्ज़ी और मशीयत इन क़वानीन से बालातर है, उनकी पाबंद नहीं। मगर ये भी हक़ीक़त है कि ये क़वानीन बहुत मोहकम हैं और अल्लाह तआला इन्हें रोज़-रोज़ तब्दील नहीं करता। अगर ये मोहकम और मुस्तक़िल ना होते तो ना साइंस को कोई तस्सवुर होता, ना कोई टेक्नोलॉजी वजूद में आ सकती। तमाम साइन्सी ईजादात और टेक्नोलॉजीज़ तबई और कीमियाई तब्दीलियों (Physical and Chemical Changes) के क़वानीन के मोहकम और मुस्तक़िल होने के बाइस ही वजूद में आई हैं। अलबत्ता ये समझना कि अल्लाह ख़ुद भी इन क़वानीन को नहीं तोड़ सकता एक खुली हिमाक़त है, और पिछली सदी में हमारा पढा-लिखा तबक़ा इसी हिमाक़त का शिकार हुआ। सर सैय्यद अहमद खान ने इसी सोच के तहत हर मौज्ज़े की कोई ना कोई साइंटिफिक तौजीह करने की कोशिश की ताकि वह मौज्ज़े के बजाय फ़ितरी अमल का हिस्सा (natural phenomenon) नज़र आए। मसलन उन्होंने हज़रत मूसा अलै. के लिये समन्दर के फ़टने का इन्कार करते हुए इसकी ताबीर इस तरह की कि ये सब कुछ मद व जज़र के अमल के सबब हुआ था। 'जज़र' के सबब जब समंदर का पानी पीछे हटा हुआ था तो हज़रत मूसा अपने साथियों को लेकर निकल गए, मगर जब फ़िरऔन अपने लश्कर के साथ गुज़र रहा था तो उस

वक़्त समंदर 'मद' पर आ गया जिसकी वजह से वह सब गर्क़ हो गए। इस सोच के पसमंज़र में बहरहाल ये गलत अक़ीदा कारफ़रमा है कि क़वानीने फ़ितरत अटल हैं और वह तब्दील नहीं होते। इसके मुक़ाबले में दुरुस्त अक़ीदा ये है कि क़वानीन फ़ितरत मोहकम, मुस्तक़िल और मज़बूत हैं मगर अटल नहीं हैं। अल्लाह जब चाहे किसी क़ानून को ख़त्म कर दे या तब्दील कर दे- और इसी का नाम मौज्जज़ा है।

आयत 70

وَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا

"और उन्होंने इरादा किया उसके साथ एक चाल चलने का"

इन अल्फ़ाज़ पर मैं एक तवील अरसे तक गौर करता रहा कि इस सारे मंसूबे में उनकी "चाल" आख़िर कौनसी थी मगर मुझे कुछ समझ ना आया। फिर यकायक ज़हन उस ख्याल की तरफ़ मुन्तक़िल हो गया कि हज़रत इब्राहीम अलै. को वह लोग दरहक़ीक़त डराना चाहते थे, जलाना नहीं चाहते थे। उन्होंने आपको आपके मौक़फ़ से हटाने के लिये इन्तहाई खौफ़नाक धमकी दी थी {حَرِّقُوْهُ} कि इसे जला डालो! उनका ख्याल था कि अभी तो ये बड़े बहादुर बने हुए हैं, बढ़-चढ़ कर बातें कर रहे हैं, मगर जब इन्हें आग के हैबतनाक अलाव के सामने ले जाकर खड़ा किया जाएगा तो इनके होश ठिकाने आ जाएँगे, और आप जान बचाने के लिये तौबा पर आमादा हो जाएँगे। यूँ उन्होंने आपके ख़िलाफ़ चाल चली मगर ये चाल उन्हें उल्टी पड़ गई।

बे-ख़तर कूद पड़ा आतिश-ए-नमरूद में इश्क़
अक़्ल है महवे तमाशा-ए-लब-ए-बाम अभी!

فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ۚ‏ 70

"लेकिन हमने उन्हीं को कर दिया ख़सारा उठाने वाले।"

वह अपनी चाल में नाकाम हो गए।

आयत 71

وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ‏71

"और हम इब्राहीम को और लूत को बचा कर उस सरज़मीन की तरफ़ निकाल ले गए जिसमें हमने बरकतें रखी हैं सब जहाँ वालों के लिये।"

हज़रत लूत अलै. हज़रत इब्राहीम अलै. के भतीजे थे। वह आप पर ईमान ले आए। फिर जब हज़रत इब्राहीम अलै. ने ईराक़ से शाम की तरफ़ हिजरत की तो हज़रत लूत अलै. भी आपके साथ थे। आप लोग ईराक़ के मशरक़ी इलाक़े के रास्ते से होते हुए शाम पहुँचे। दरमियान में चूँकि शरक़े उरदन वगैरह का इलाक़ा नाक़ाबिले उबूर सहरा पर मुश्तमिल था इसलिये शाम के शिमाली इलाक़े से होते हुए और फिर नीचे की तरफ़ सफ़र करते हुए फ़लस्तीन पहुँचे और वहाँ मुस्तक़िल तौर पर सकूनत इख़्तियार की।

आयत 72

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ ۭ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۭ

"और हमने उसको इसहाक़ अता फ़रमाया और याक़ूब इस पर मज़ीद।"

अल्लाह तआला ने आपको इसहाक़ अलै. जैसा बेटा और याक़ूब अलै. जैसा पोता अता फ़रमाया।

وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ؀72

"और इन सबको हमने सालेह बनाया।"

आयत 73

وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا

"और हमने उन्हें इमाम बना दिया, जो हिदायत देते थे हमारे हुक्म से"

यानि लोगों की रहनुमाई और रहबरी करते थे।

وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَاۗءَ الزَّكٰوةِ ۚ

"और हमने उनकी तरफ़ वही की नेक काम करने, नमाज़ क़ायम करने और ज़कात अदा करने की।"

وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ؀73

"और वह सबके सब हमारी बंदगी करने वाले थे।"

यहाँ आपको कुछ अम्बिया का तज़किरा और उनके औसाफ़ पर मुश्तमिल आयात का गुलदस्ता देखने को मिलेगा। इस ज़िमन में ये भी मद्देनज़र रहे कि इस सूरत में तमाम अम्बिया का ज़िक्र अन्नबाअ अर्रुसुल की बजाय क़सस-उन-नबिय्यीन के अंदाज़ में हुआ है।

आयत 74

وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا

"और लूत को हमने हुक्म और इल्म अता फ़रमाया"

हुक्म से हिकमत, फ़हम और क़ुव्वते फ़ैसला मुराद है।

وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَـبٰۗىِٕثَ ۭ

"और हमने उसे निजात दी उस बस्ती से जो गंदे काम करती थी।"

यानि उस बस्ती के लोग गंदे कामों में मुब्तला थे।

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ۙ؀74

"यक़ीनन वह निहायत बुरे और नाफ़रमान लोगों की क़ौम थी।"

आयत 75

وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ۭ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ 75

"और लूत को हमने अपनी रहमत में दाख़िल किया। यक़ीनन वह (हमारे) सालेह बन्दों में से था।"

आयात 76 से 94 तक

وَنُوْحًا اِذْ نَادٰي مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ 76 وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ
اَجْمَعِيْنَ 77 وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِي الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ 78 فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا
حُكْمًا وَّعِلْمًا ۡ وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ۭ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ 79 وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ
80 وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖٓ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۭ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ 81 وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ
عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ 82 وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰي رَبَّهٗٓ اَنِّىْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ 83 فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ
مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰي لِلْعٰبِدِيْنَ 84 وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ۭ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ 85 وَاَدْخَلْنٰهُمْ
فِيْ رَحْمَتِنَا ۭ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ 86 وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰي فِي الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ڰ
اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ 87 فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ۭ وَكَذٰلِكَ نُـْۨجِي الْمُؤْمِنِيْنَ 88 وَزَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰي رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا
وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ 89 فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۡ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْـيٰى وَاَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَــيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ۭ وَكَانُوْا
لَنَا خٰشِعِيْنَ 90 وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ 91 اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ڮ وَّاَنَا رَبُّكُمْ
فَاعْبُدُوْنِ 92 وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ۭ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ 93 فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ 94

आयत 76

وَنُوْحًا اِذْ نَادٰي مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ

"और नूह को भी (हमने अपनी हिदायत बख्शी) जब उसने दुआ की थी इससे पहले, तो हमने उसकी दुआ क़ुबूल की"

ये उस दुआ की तरफ़ इशारा है जो सूरतुल क़मर (आयत:10) में नक़ल हुई है: {فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنِّىْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ} कि परवरदिगार मैं तो मग्लूब हो गया हूँ, अब तू मेरी मदद फ़रमा और तू ही इन काफ़िरों से इंतेक़ाम ले। आपकी ये दुआ क़ुबूल फ़रमाई गई और उस ना फ़रमान क़ौम को ग़र्क़ कर दिया गया।

فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ 76

"तो हमने निजात दी उसको और उसके घर वालों को बहुत बड़े कर्ब से।"

आयत 77

وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ

"और हमने उसकी मदद की उस क़ौम के मुक़ाबले में जिन्होंने हमारी आयात को झुठलाया था।"

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ 77

"यक़ीनन वह बहुत बुरे लोग थे, तो हमने उन सबको ग़र्क़ कर दिया।"

आयत 78

وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِي الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ

"और दाऊद अलै. और सुलेमान अलै. को (भी यही नेअमत अता फ़रमाई) जब वह एक खेती के बारे में फ़ैसला कर रहे थे, जब

उसमें घुस गई थीं कुछ लोगों की बकरियाँ।"

किसी शख्स ने अपनी खेती में बड़ी मेहनत से फ़सल तैयार की थी मगर किसी दूसरे क़बीले की बकरियों के रेवड़ ने खेत में घुस कर तमाम फ़सल तबाह कर दी। अब यह मुक़दमा हज़रत दाऊद अलै. की अदालत में पेश हुआ।

"और हम उनके फ़ैसले के वक़्त वहाँ मौजूद थे।"

وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ــ78ۙ

आयत 79

"तो हमने फ़हम अता कर दिया इस (फ़ैसले) का सुलेमान को।"

فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ

फ़ैसले के वक़्त हज़रत सुलेमान अलै. भी शहज़ादे की हैसियत से दरबार में मौजूद थे। अल्लाह तआला ने इस मुक़दमे का एक हकीमाना हल उनके ज़हन में डाल दिया। चुनाँचे हज़रत सुलेमान अलै. ने इस मसले का हल ये बताया कि बकरियाँ आरज़ी तौर पर खेती वाले को दे दी जाएँ, वह उनके दूध वगैरह से फ़ायदा उठाए। दूसरी तरफ़ बकरियों के मालिक को हुक्म दिया जाए कि वह इस खेती को दोबारा तैयार करे। इसमें हल चलाए, बीज डाले, आबपाशी वगैरह का बंदोबस्त करे। फिर जब फ़सल पहले की तरह तैयार हो जाए तो उसे उसके मालिक के सुपुर्द करके अपनी बकरियाँ वापस ले ले।

"और हर एक को हमने हुक्म और इल्म अता किया था।"

وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۚ

"और हमने मुसख्खर कर दिया था दाऊद के साथ पहाड़ों को जो तस्बीह करते थे और परिंदों को भी (मुसख्खर कर दिया था)।"

وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ۭ

हज़रत दाऊद अलै. की आवाज़ बहुत अच्छी थी। इसी लिये लहले दाऊदी का तज़किरा आज भी ज़रबुल मिसल के अंदाज़ में होता है। चुनाँचे जब हज़रत दाऊद अलै. अपनी दिलकश आवाज़ में ज़बूर के मज़ामीर (अल्लाह की हम्द के नगमे) अलापते तो पहाड़ भी वजद में आकर आपकी आवाज़ में आवाज़ मिलाते थे और उड़ते हुए परिंदे भी ऐसे मौक़े पर उनके साथ शरीक हो जाते थे।

"और ये सब कुछ करने वाले हम ही थे।"

وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ــ79

ज़ाहिर है ये सब अल्लाह ही की क़ुदरत के अजाइबात (अजूबे) थे।

आयत 80

وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ

"और हमने उन्हें तुम्हारे लिये लिबास की सनअत सिखाई"

यहाँ लिबास से मुराद जंगी लिबास यानि ज़िरह बकतर है। गोया ज़िरह हज़रत दाऊद अलै. की ईजाद है। अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद अलै. के लिये लोहे को नर्म कर दिया था और उन्हें ये हुनर बराहेरास्त सिखाया था।

لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ــ80

"ताकि वह तुम्हें बचाए तुम्हारी जंग से, तो क्या तुम शुक्र गुज़ार बनते हो?"

जंग के दौरान ज़िरह बकतर तलवार, नेज़े और तीरों से एक सिपाही की हिफ़ाज़त करती है।

आयत 81

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖٓ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۭ

"और (हमने मुसख्खर कर दिया था) सुलेमान के लिये तेज़ चलने वाली हवा को, जो उसके हुक्म से चलती थी इस सरज़मीन की तरफ़ कि जिसमें हमने बरकत अता की थी।"

وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ــ81

"और हम तमाम चीज़ों का इल्म रखने वाले हैं।"

आयत 82

وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ

"और श्यातीन में से (भी हमने बहुत सों को मुसख्खर कर दिया था) जो उसके लिये (समुन्दरों में) गोताखोरी करते थे"

यानि जिन्नात हज़रत सुलेमान अलै. के हुक्म से समुन्दरों में गोते लगाते थे और इनकी तहों से मोती और दूसरी मुफ़ीद चीज़ें निकाल कर लाते थे।

وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ

"और वह इसके अलावा बहुत से दूसरे काम भी करते थे।"

وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ۙ ــ82

"और हम ही उन पर निगरान थे।"

गोया वह जिन्न हज़रत सुलेमान अलै. के ताबेअ थे तो ये भी हमारी क़ुदरत का कमाल था।

आयत 83

وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰي رَبَّهٗٓ

"और अय्यूब (पर भी हमारा फ़ज़ल हुआ) जब उसने अपने परवरदिगार को पुकारा"

हज़रत अय्यूब अलै. भी जलीलुल क़द्र नबी हैं और क़ुरान में आपको साबिर कहा गया है। अल्लाह तआला ने शदीद बीमारियों के ज़रिये आपकी आज़माइश की मगर आप हर हाल में साबिर और शाकिर रहे। यही वजह है कि "सब्र-ए-अय्यूब" ज़रबुल मिसल की हैसियत इख़्तियार कर गया है। वाज़ेह रहे कि शिकवा व शिकायत और जज़ा-फ़ज़ा सब्र के मनाफ़ी हैं, जिसका इज़हार आपने कभी नहीं किया, अलबत्ता दुआ सब्र के मनाफ़ी नहीं है।

اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ؀83ښ

"कि मुझे बहुत ज़्यादा तक़लीफ़ पहुँची है और तू तमाम रहम करने वालों से बढ़ कर रहम करने वाला है।"

आयत 84

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ

"तो हमने उसकी दुआ क़ुबूल की और उसको जो तकलीफ़ थी उसको दूर कर दिया"

आप एक ऐसी बीमारी में मुब्तला थे जिससे आपकी जिल्द में तअफ्फुन पैदा हो जाता था। ज़ख्मों और फोड़ों से बदबू आती थी जिसकी वजह से आपके अहले खाना तक आपको छोड़ गए थे।

وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ

"और हमने उसे अता किये उसके घरवाले और उनके साथ इतने ही और भी।"

यानि आपके अहले खाना भी आपके पास वापस आ गए और आपको इतनी ही मज़ीद औलाद भी अता फ़रमाई।

رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰي لِلْعٰبِدِيْنَ ؀84

"अपनी तरफ़ से ख़ास रहमत के तौर पर, और ताकि नसीहत (याद दिहानी) हो इबादत करने वालों के लिये।"

आयत 85

وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ۭ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ؀85ښ

"और (इसी तरह) इस्माईल अलै. और इदरीस अलै. और ज़ुल किफ्ल अलै. (पर भी हमने फ़ज़ल किया)। वह सब साबिरीन में से थे।"

हज़रत इदरीस अलै. का ज़िक्र सूरह मरियम की आयत 56 के ज़िमन में भी आ चुका है कि आप हज़रत आदम अलै. के बाद और हज़रत नूह अलै. से

पहले मबऊस हुए थे। इनसे क़ब्ल हज़रत शीश अलै. की बेअसत भी हो चुकी थी। हज़रत ज़ुल किफ्ल अलै. के बारे में कहीं से कोई मालूमात दस्तयाब नहीं हैं कि आप कब और किस इलाक़े में मबऊस हुए। अहादीस में भी आपका तज़किरा नहीं मिलता। अलबत्ता मौजूदा दौर के एक आलिम और मोहक्क़िक़ मौलाना मनाज़र अहसन गिलानी रहि. का ख्याल है कि कुल किफ्ल से मुराद गौतम बुद्ध हैं और यह कि गौतम बुद्ध अल्लाह के नबी थे। उनके इस दावे के बारे में यक़ीन से तो कुछ नहीं कहा जा सकता, लेकिन इस सिलसिले में मौलाना के दलाइल में बहरहाल बहुत वज़न है। गौतम बुद्ध के बारे में तारीख़ी ऐतबार से हमें इस क़दर मालूमात मिलती हैं कि वह रियासत "कपिलवस्तु" के शहज़ादे थे। मौलाना के मुताबिक़ "कपिल" ही दरअसल "किफ्ल" है यानि हिंदी की "प" अरबी की "फ़" से बदल गई है। इस तरह ज़ुल किफ्ल का मतलब है: "किफ्ल (कपिल) वाला।" यानि कपिल रियासत का वाली (सिधार का बुधाय गौतम बुद्ध)।

आज जो अक़ाइद गौतम बुद्ध से मंसूब किये जाते हैं, उनमें यक़ीनन बहुत कुछ तहरीफ़ भी शामिल हो चुकी होगी। जैसे हज़रत ईसा अलै. की तालीमात में भी आपके पैरोकारों ने बहुत से मनघड़त अक़ाइद शामिल कर लिये हैं। मुमकिन है कि गौतम बुद्ध की असल तालीमात इल्हामी ही हों और बाद के ज़माने में उनमें तहरीफ़ कर दी गई हो। बहरहाल मैं समझता हूँ कि इस ज़िमन में मौलाना मनाज़िर अहसन गिलानी रहि. के दलाइल काफ़ी मअक़ूल और ठोस हैं।

आयत 86

وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِیْ رَحْمَتِنَا ۫ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِیْنَ—86

"और हमने उनको अपनी रहमत में दाख़िल किया। यक़ीनन वह सब सालेहीन में से थे।"

आयत 87

وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا

"और मछली वाले को भी (हमने नवाज़ा) जब वह चल दिया गुस्से में भरा हुआ"

यानि हज़रत युनुस अलै.। आपको "मछली वाला" इसलिये फ़रमाया गया है कि आपको मछली ने निगल लिया था। आपको शहर नैनवा की तरफ़ मबऊस फ़रमाया गया था। आपने अपनी क़ौम को बुतपरस्ती से रोका और हक़ की तरफ़ बुलाया। आपने बार-बार दावत दी, हर तरह से तब्लीग व तज़कीर का हक़ अदा किया, मगर उस क़ौम ने आपकी किसी बात को ना माना। बिल आख़िर अल्लाह तआला की तरफ़ से उन पर अज़ाब भेजने का फ़ैसला हो गया। इस मौक़े पर आप हमियते हक़ के जोश में क़ौम से बरहम होकर उनको अज़ाब की ख़बर सुना कर वहाँ से निकल आए। इस सिलसिले में बुनियादी तौर पर आपसे एक "सह्व" सरज़द हो गया कि आपने अल्लाह तआला की तरफ़ से इजाज़त आने से पहले ही अपने मक़ामे बेअसत से हिजरत कर ली, जबकि अल्लाह की बाक़ायदा इजाज़त के बगैर कोई रसूल अपने मक़ामे बेअसत को छोड़ नहीं सकता। इसी असूल और क़ानून के तहत हम देखते हैं कि हुज़ूर ﷺ ने तमाम मुसलमानों को मक्का से मदीना हिजरत करने की इजाज़त दे दी थी, मगर आपने खुद उस वक़्त तक हिजरत नहीं

फ़रमाई जब तक अल्लाह तआला की तरफ़ से बाक़ायदा इसकी इजाज़त नहीं मिल गई।

बिलाशुबह अल्लाह तआला के क़वानीन बहुत सख्त हैं और अल्लाह के मुक़र्रिब बन्दों का मामला तो अल्लाह के यहाँ ख़ुसूसी अहमियत का हामिल होता है। इन आयात का मुताअला और तर्जुमा करते हुए हमें ये बात अपने ज़हन में रखनी चाहिये कि ये मामला अल्लाह अज्ज़-वजल और उसके एक जलीलुल क़द्र रसूल के माबैन है। इसे हम अल्फ़ाज़ के बज़ाहिर मफ़हूम पर महमूल नहीं कर सकते। हज़रत युनुस अलै. वह रसूल हैं जिनके बारे में हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया: "मुझे युनुस इब्ने मता पर भी फज़ीलत ना दो।" बहरहाल हज़रत युनुस अलै. हमियते हक़ के बाइस अपनी क़ौम पर ग़ज़बनाक होकर वहाँ से निकल खड़े हुए।

فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ

"और उसने गुमान किया कि हम उसे पकड़ नहीं सकेंगे"

वल्लाह आलम! ये अल्फ़ाज़ बहुत सख्त हैं। मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी रह. ने इन अल्फ़ाज़ की वज़ाहत करते हुए लिखा है कि ये मतलब नहीं कि माज़ अल्लाह, युनुस अलै. फ़िल वाक़ेअ ऐसा समझते थे कि वह बस्ती से निकल कर गोया अल्लाह तआला की कुदरत से ही निकल गए, बल्कि आपके तर्ज़े अमल से यूँ लगता था। यानि सूरतेहाल ऐसी थी के देखने वाला यह समझ सकता था कि शायद आपने ऐसा समझा था कि अल्लाह उनको पकड़ नहीं सकेगा, लेकिन ज़ाहिर है कि इसका कोई इम्कान नहीं कि हज़रत युनुस अलै. के दिल में ऐसा कोई ख्याल गुज़रा हो। वाक़िया यह है कि अल्लाह तआला अपने कामिल बन्दों की अदना तरीन लग्ज़िश का ज़िक्र भी बहुत सख्त पैराया में करता है। मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी रह. ने लिखा है कि इससे कामिलीन की तनक़ीस नहीं होती, बल्कि जलालते शान ज़ाहिर होती है कि इतने बड़े होकर ऐसी छोटी सी फ़रोगज़ाश्त भी क्यों करते हैं? "जिनके रुतबे हैं सवा, उनकी सवा मुश्किल है!"

فَنَادٰي فِي الظُّلُمٰتِ

"पस उसने (अल्लाह तआला को) तारीकियों के अन्दर पुकारा"

आप अपने इलाक़े से निकलने के बाद एक कश्ती में सवार हुए और वहाँ ऐसी सूरतेहाल पैदा हुई कि आपको दरिया में छलाँग लगाना पड़ी और एक बड़ी मछली ने आपको निगल लिया। मछली के पेट और क़अर (bottom) दरिया की तारीकियों में आप तस्बीह करते और अल्लाह को पुकारते रहे:

اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ڱ اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ؀87ښ

"कि तेरे सिवा कोई मअबूद नहीं, तू पाक है और यक़ीनन मैं ही जालिमों में से हूँ।"

ऐ अल्लाह! मुझसे गलती हो गई है, मैं ख़ताकार हूँ, तू मुझे माफ़ कर दे! ये आयत "आयते करीमा" कहलाती है। रिवायात में इस आयत के बहुत फ़ज़ाइल बयान हुए हैं। किसी मुसीबत या परेशानी के वक़्त ये दुआ सदक़े दिल से माँगी जाए तो कभी क़बूलियत से महरूम नहीं रहती।

आयत 88

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ۭ

"तो हमने उसकी दुआ क़ुबूल फ़रमाई और उसे ग़म से निजात दी।"

وَكَذٰلِكَ نُـــْجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ؀88

"और इसी तरह हम निजात दिया करते हैं अहले ईमान को।"

यानि यह मामला हज़रत युनुस अलै. के साथ मख्सूस नहीं। जो अहले ईमान भी हमको इसी तरह पुकारेंगे हम उनको मसाइब से निजात देंगे।

आयत 89

وَزَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰي رَبَّهٗ

"और ज़करिया को, जब उसने पुकारा अपने रब को"

इस बारे में तफ़सील सूरह मरियम में गुज़र चुकी है।

رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ؀89ښ

"परवरदिगार! मुझे अकेला ना छोड़, और यक़ीनन तू ही बेहतरीन वारिस है।"

ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे कोई ऐसा वारिस अता फ़रमा जो मेरे इस मिशन को ज़िन्दा रख सके।

आयत 90

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۡ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْـيٰى وَاَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ۭ

"तो हमने उसकी दुआ क़ुबूल फ़रमाई और उसे, याहिया अलै. (जैसा बेटा) अता फ़रमाया और उसकी बीवी को उसके लिये सेहतमंद बना दिया।"

اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَــيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ۭ

"यक़ीनन ये लोग हैं जो भलाई के कामों में बहुत जल्दी करते थे और हमें पुकारते थे रगबत और खौफ़ से।"

अल्लाह तआला के साथ उनका मामला बैन अलखौफ़ वर्रजाअ (खौफ़ और उम्मीद के दरमियान) वाला होता था। अल्लाह के मुआख्ज़े से डरते भी थे और उसकी रहमत के उम्मीदवार भी रहते थे।

وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ؀90

"और वह सब हमारे सामने आजिज़ी इख़्तियार करने वाले थे।"

औसाफ़-ए-अंबिया के इस ख़ूबसूरत गुलदस्ते के आख़िर में अब हज़रत मरियम (सलामुन अलैहा) का ज़िक्र आ रहा है।

आयत 91

وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا

"और वह खातून जिसने अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त की"

यानि पूरी तरह से पाक दामन रहीं।

فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا

"तो हमने उसमें फूँक दिया अपनी रूह से"

यानि हर्फ़े "कुन" बेटे की पैदाइश का ज़रिया बन गया।

وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ــ91

"और हमने उसे और उसके बेटे को एक निशानी बना दिया तमाम जहान वालों के लिये।"

आयत 92

اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ

"यक़ीनन तुम्हारी ये उम्मत, एक ही उम्मत है"

उम्मते इब्राहीम अलै, उम्मते इस्माईल अलै, उम्मते मूसा अलै, उम्मते ईसा अलै, उम्मते मोहम्मद ﷺ और दूसरे तमाम अम्बिया की उम्मतें बुनियादी तौर पर एक ही दीन की पैरोकार थीं और यूँ तमाम अम्बिया और उनके पैरोकार गोया एक ही उम्मत के अफ़राद थे। इस मज़मून को सूरतुल बक़रह की आयत 213 में इस तरह बयान फ़रमाया गया है: {كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً} यानि शुरू में तमाम इंसान एक ही उम्मत थे और एक ही दीन के मानने वाले थे। फिर लोगों ने अपनी-अपनी सोच और अपने-अपने मफ़ादात के मुताबिक़ सिराते मुस्तक़ीम में से पगडंडियाँ निकाल लीं, मुख्तलिफ़ गिरोहों ने नए-नए रास्ते बना लिये और उन गलत रास्तों पर वह इतनी दूर चले गए कि असल दीन मस्ख होकर रह गया और अब इन मुख्तलिफ़ गिरोहों के नज़रियात की ये मुगाएरत इस हद तक बढ़ चुकी है कि "पहचानी हुई सूरत भी पहचानी नहीं जाती!"

यानि आज बहुत से मज़ाहिब की असली शक्ल को पहचानना भी मुम्किन नहीं रहा। उनके बिगड़े हुए अक़ाइद को देख कर यक़ीन नहीं आता कि कभी इनका ताल्लुक़ भी दीने हक़ से था। बहरहाल हक़ीक़त यही है कि तमाम अम्बिया व रुसुल अलै. का ताल्लुक़ एक ही उम्मत से था। वह सब एक ही अल्लाह को मानने वाले थे और सब एक ही दीन लेकर आए थे, अलबत्ता मुख्तलिफ़ अम्बिया की शरीअतों के तफ़सीली अहकामात में बाहम फ़र्क़ पाया जाता रहा है। ये मज़मून मज़ीद वज़ाहत के तहत सूरतुश्शौरा में आएगा।

وَاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ــ92

"और मैं ही तुम सबका रब हूँ, लिहाज़ा तुम लोग मेरी ही बंदगी करो!"

आयत 93

"और इन्होंने अपने मामले को आपस में टुकड़े-टुकड़े कर लिया।" وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ

बक़ौल इक़बाल:

उड़ाए कुछ वर्क़ लाले ने, कुछ नरगिस ने, कुछ गुल ने
चमन में हर तरफ़ बिखरी हुई है दास्ताँ मेरी!

ये मज़मून सूरतुल हिज्र में इस तरह बयान हुआ है: {كَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَي الْمُقْتَسِمِيْنَ الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ} {فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ} (आयात:90-92) "(ये इसी तरह की तंबीह है) जिस तरह हमने उन तफ़रक़ा बाज़ों की तरफ़ भेजी थी। जिन्होंने अपने क़ुरान तो टुकड़े-टुकड़े कर दिया। तो (ऐ मोहम्मद ﷺ) आपके रब की क़सम! हम इन सबसे पूछ कर रहेंगे।" इस कैफ़ियत की अमली तस्वीर आज उम्मते मुस्लिमा में भी देखी जा सकती है। आज हमारे यहाँ सूरतेहाल ये है कि हर जमाअत, गिरोह या मसलक के पैरोकारों ने क़ुरान का कोई एक मौज़ू अपने लिये मख्सूस कर लिया है और उन लोगों के नज़दीक़ बस उसी की अहमियत है और वही कुल दीन है। मसलन एक गिरोह क़ुरान में से चुन-चुन कर सिर्फ़ उन आयात को अपना तहरीर व तक़रीर का मौज़ू बनाता है जिनमें हुज़ूर ﷺ की रफ़अते शान और मोहब्बत का तज़किरा है। गोया उन्होंने क़ुरान का सिर्फ़ वह हिस्सा अपने लिये अलाट (allot) करा लिया है। उनके मुक़ाबले में एक दूसरा गिरोह: {قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ} (अल कहफ़ 110) और इससे मिलते-जुलते मज़ामीन की आयात पर डेरा डाल कर हुज़ूर ﷺ की बशरियत को नुमाया करने और मुशरिकाना औहाम की नफ़ी करने की कोशिश में मसरूफ़ है। अगर कोई गिरोह औलिया अल्लाह और सूफ़िया से अक़ीदत का दावेदार है तो उनकी हर गुफ्तुगू और तक़रीर का महवर (युनुस 62) {اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ} ही होता है। अलगर्ज़ हर गिरोह के यहाँ किताबुल्लाह की चंद आयात पर ज़ोर है और बाक़ी तालीमात की तरफ़ कोई तवज्जोह नहीं। चुनाँचे आज के इस दौर में क़ुरान को एक वहदत की हैसियत से पेश करने की अशद ज़रूरत है, जिसके लिये हर साहिबे इल्म को इस्ततआअत भर कोशिश करनी चाहिये।

"यह सबके सब हमारी ही तरफ़ लौट कर आने वाले हैं।" كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ۔—93

आयत 94

"तो जो कोई भी नेक अमल करेगा और वह मोमिन भी होगा तो उसकी सई व कोशिश की नाक़दरी नहीं की जाएगी।" فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ

अल्लाह तआला "अश्शकूर" (क़दरदान) है। अगर किसी के दिल में ईमान बिल्लाह और ईमान बिलआख़िरत मौजूद है तो उसके इख्लास और ईसार के मुताबिक़ उसके हर नेक अमल की जज़ा दी जाएगी। ऐसे किसी शख्स के छोटे से अमल की भी नाक़दरी नहीं की जाएगी।

रहे वह लोग जो अल्लाह और आख़िरत पर ईमान नहीं रखते लेकिन नेकी और भलाई के मुख्तलिफ़ काम भी करते हैं तो अल्लाह को उनके ऐसे

किसी अमल से कोई सरोकार नहीं। बहरहाल जो कोई भी नेकी का कोई काम अल्लाह की रज़ा और आख़िरत के अज्र की नीयत के बजाय महज़ दिखावे या किसी और गर्ज़ की बिना पर करेगा तो उसे उसका कोई अज्र आख़िरत में नहीं मिलेगा। मसलन अगर कोई शख्स इलेक्शन लड़ना चाहता है और इसके लिये घर-घर जाकर खैरात बाँट रहा है तो उसके इस अमल के पीछे इस उसका ख़ास मक़सद और मफ़ाद है ना कि अल्लाह की रज़ा। लिहाज़ा अल्लाह के यहाँ ऐसा कोई भी अमल क़ाबिले क़ुबूल नहीं है।

وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ــ94

"और हम उसके लिये (उसके आमाल को) लिख रहे हैं।"

ख़ालिस हमारी रज़ा के हुसूल के लिये या हमारे दीन की सरबुलंदी के लिये जो, जहाँ और जब कोई अमल अंजाम पा रहा है हम उसे अपने यहाँ लिख रहे हैं ताकि ऐसे हर एक अमल का पूरा-पूरा अज्र दिया जाए।

आयात 95 से 112 तक

وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَاۤ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ــ95 حٰٓى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ــ96 وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِىَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِىْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ــ97 اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ؕ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ــ98 لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ؕ وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ــ99 لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّهُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ــ100 اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰٓى ۙ اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ــ101 لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا ۚ وَهُمْ فِىْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ــ102 لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِىْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ــ103 يَوْمَ نَطْوِى السَّمَآءَ كَطَىِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ؕ كَمَا بَدَاْنَاۤ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ؕ وَعْدًا عَلَيْنَا ؕ اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ ــ104 وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِى الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِىَ الصّٰلِحُوْنَ ــ105 اِنَّ فِىْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ ــ106 وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ــ107 قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ــ108 فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ وَاِنْ اَدْرِىْۤ اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ ــ109 اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُوْنَ ــ110 وَاِنْ اَدْرِىْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ــ111 قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ وَرَبُّنَا الرَّحْمٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ــ112

आयत 95

وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَاۤ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ــ95

"और हराम है हर उस बस्ती पर जिसको हमने हलाक किया कि (वह लौट आयें) अब वह लौटने वाले नहीं हैं।"

इस आयत का एक मफ़हूम तो यह है कि जिन बस्तियों पर अल्लाह के अज़ाब का फ़ैसला हो जाता था, वहाँ के लोग नबी या रसूल के आने के बाद भी कुफ़्र व शिर्क से लौटने वाले नहीं होते थे। अल्लाह तआला उन पर इत्मामे हुज्जत के लिये रसूल तो भेज देता था, लेकिन उसको ख़ूब मालूम था कि कुफ़्र व शिर्क से उन लोगों के रुजूअ करने और ईमान लाने का कोई इम्कान नहीं। इसका दूसरा मफ़हूम यह भी है कि अल्लाह के अज़ाब से जो बस्ती एक दफ़ा बर्बाद हो गई फिर उसके दोबारा आबाद होने का कोई इम्कान नहीं।

आयत 96

حٰٓى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ــ96

"यहाँ तक कि जब खोल दिये जाएँगे याजूज व माजूज, और वह हर ऊँचाई के ऊपर से फिसलते हुए चले आएँगे।"

क़ुरान में याजूज और माजूज का ज़िक्र इस आयत के अलावा सूरतुल कहफ़ में भी आया है। सूरतुल कहफ़ के मुताअले के दौरान इस मौज़ू पर तफ़सील से बहस हो चुकी है। याजूज और माजूज की यलगार से बचाव के लिये ज़ुलक़र नैन की तामीरशुदा दीवार से मुताल्लिक़ बहुत वाज़ेह मालूमात

दुनिया के सामने आ चुकी हैं। दुनिया के नक़्शे में "दरबंद" वह जगह है जहाँ पर वह दीवार तामीर की गई थी। दीवार अब वहाँ बिलफ़अल तो क़ायम नहीं, मगर उसके वाज़ेह आसार उस जगह पर मौजूद हैं। इन आसार से दीवार की dimensions का अंदाज़ा भी लगाया जा सकता है।

आयत ज़ेरे नज़र से वाज़ेह होता है कि क़ुर्बे क़यामत के ज़माने में याजूज और माजूज का सैलाब एक बार फिर आने वाला है। इस सिलसिले में एक राय यह भी है कि अट्ठारहवीं और उन्नीसवीं सदी के दौरान यूरोपी अक़वाम की यलगार (colonization) भी इस आयात का मिस्दाक़ है जिसके नतीजे में उन्होंने पूरे एशिया और अफ्रीक़ा पर बतदरीज क़ब्ज़ा जमा लिया था। यानि एक ही वक़्त में फ़्रांसिसी, वलंदेज़ी और बरतानवी अक़वाम ने मलाया, इंडोनेशिया, हिन्दुस्तान समेत पूरे एशिया और अफ्रीक़ा को गुलाम बना लिया था। ये तमाम लोग सेकंडे यूनियन मुमालिक से उतरी हुई अक़वाम की नस्ल से थे, जिनको Nordic Races कहते हैं और यूरोप के White Anglo Saxons लोग भी इन्हीं की औलाद से हैं। दरअसल यही वे अक़वाम हैं जो मुख्तलिफ़ अदवार में मुहज्ज़ब दुनिया पर हमलावर होकर ज़ुल्म व सितम और लूट-मार का बाज़ार गर्म करती रही हैं। अल्लामा इक़बाल ने भी अपने इस शेर में यूरोपी अक़वाम के इस नौआबादयाती इस्तअमार (colonizat-ion) को याजूज और माजूज के तसल्लुत से ताबीर किया है:

खुल गए याजूज और माजूज के लश्कर तमाम
चश्मे मुस्लिम देख ले तफ़सीर-ए-हर्फ़े-यन्सिलून!

वक़्त गुज़रने के साथ-साथ बज़ाहिर इन अक़वाम की अफ़वाज़ को इन मक़बूज़ा ममालिक से निकलना पड़ा, लेकिन बिलवास्ता तौर पर वह अपने कठपुतली इदारों और अफ़राद के ज़रिये इन ममालिक पर मुसलसल अपना तसल्लुत जमाए हुए हैं। इस सिलसिले में वर्ल्ड बैंक, आई.एम.एफ़. और बहुत से दीगर मल्टी नेशनल इदारे इनके आला-ए-कार हैं।

अलबत्ता अहादीस में क़ुर्बे क़यामत के ज़माने के हालात व वाक़िआत की जो तफ़सील मिलती है उसके मुताबिक़ क़यामत के क़ब्ल एक दफा फ़िर याजूज और माजूज का सैलाब आएगा। इन तफ़सीलात का ख़ुलासा यह है कि क़ुर्बे क़यामत के ज़माने में एक बहुत ख़ौफ़नाक जंग (अहादीस में इसका नाम मल्हमातुल उज़मा, जबकी इसाई रिवायात में Armageddon बताया गया है) होगी जिसमें यहूदी और इसाई मुसलमानों के मुक़ाबिल होंगे। फ़लस्तीन, शाम और मशरिके वुस्ता का इलाक़ा बुनियादी तौर पर मैदान-ए-जंग बनेगा, जिसकी वजह से इस इलाक़े में बहुत बड़ी तबाही फैलेगी। इसी ज़माने हज़रत मसीह अलै. का नुज़ूल और इमाम मेहदी का ज़हूर होगा। इमाम मेहदी हज़रत फ़ातिमा रज़ि. की नस्ल और हज़रत हसन रज़ि. की औलाद में से होंगे। इससे पहले खुरासान और मशरिक़ी ममालिक में इस्लामी हुकूमत क़ायम हो चुकी होगी और इन इलाक़ों से मुसलमान अफ़वाज़ मशरिक़े वुस्ता में अपने मुसलमान भाइयों की मदद के लिये जाएँगी। इस जंग में बिलआख़िर फ़तह मुसलमानों की होगी। हज़रत मसीह अलै. के साथ अल्लाह तआला की मौज्ज़ाना ताईद होगी, जिससे आप यहूदियों को ख़त्म कर देंगे। आपकी आँखों में एक ख़ास तासीर (आज की लेज़र टेक्नोलॉजी से भी मौअस्सर) होगी, जिसकी वजह से आपकी निगाह

पड़ते ही यहूदी पिघलते चले जाएँगे। फिर आप दज्जाल (जो मसीह होने का झूठा दावेदार होगा) को क़त्ल करेंगे। हदीस में आता है कि दज्जाल भागने की कोशिश में होगा कि हज़रत मसीह अलै. उसको मक़ामे लुद्द पर जा लेंगे और क़त्ल कर देंगे। (वाज़ेह रहे कि Lydda इसराइल का सबसे बड़ा एयरबेस है।)

इन सब वाक़िआत के बाद याजूज और माजूज के सैलाब की शक्ल में एक दफ़ा फिर दुनिया पर मुसीबत टूट पड़ेगी। आयत ज़ेरे नज़र में याजूज और माजूज की यलगार के रास्तों (routs) के लिये लफ्ज़ "हदब" इस्तेमाल हुआ है, जिसके मायने ऊँचाई के हैं। मंदरजा बाला आरा के मुताबिक़ जिन अक़वाम पर याजूज और माजूज का इतलाक़ होता है उन सबके इलाक़े हिमालय और वस्ती एशिया के पहाड़ी सिलसिलों के शिमाल में वाक़ेअ हैं। ऐन मुमकिन है कि यह लोग इन पहाड़ी सिलसिलों को उबूर करते हुए जुनूबी इलाक़ों पर यलगार करें और यूँ "مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ" के अल्फ़ाज़ की अमली ताबीर का नक्शा दुनिया के सामने आ जाए।

आयत 97

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۔

"और क़रीब आ लगेगा वह सच्चा वादा, तो उस वक़्त काफ़िरों की निगाहें पथरा जाएँगी।"

इन्तहाई खौफ़ की वजह से इंसान की आँख हरकत करना भूल जाती है। कुफ्फ़ार व मुशरिकीन क़यामत के दिन इसी कैफ़ियत से दो-चार होंगे।

يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۔97

"(वह कहेंगे) हाय हमारी शामत! हम तो इसकी तरफ़ से गफ़लत में ही रहे, बल्कि हम खुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले थे।"

हम आख़िरत का इन्कार करके अपनी जानों पर ज़ुल्म करते रहे। हमें अल्लाह के रसूल ﷺ के ज़रिये तमाम ख़बरें मिल चुकी थीं लेकिन हमने गफ़लत और लापरवाही का मुज़ाहिरा किया और इस तरफ़ कभी तवज्जोह ही ना की।

आयत 98

اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ۔ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ۔98

"यक़ीनन तुम लोग और जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो, सब जहन्नम का ईंधन बनोगे। तुम्हें उसमें पहुँच कर रहना है।"

आयत 99

لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ۔ وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۔99

"अगर ये वाक़ई मअबूद होते तो इस (जहन्नम) में दाख़िल ना होते। और वह सबके सब उसमें हमेशा-हमेश रहेंगे।"

आयत 100

لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّهُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ١٠٠

"इन्हें उसमें चीखना-चिल्लाना होगा, और उसमें कुछ सुन नहीं सकेंगे।"

इनके मअबूद जो इनके साथ ही जल रहे होंगे, वह इनकी उस चीख़ व पुकार को सुन नहीं पाएँगे।

आयत 101

اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰٓى ۙ

"यक़ीनन वह लोग जिनके लिये हमारी तरफ़ से पहले ही भलाई का फ़ैसला हो चुका है"

اُولٰۗىِٕكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ۙ ١٠١

"वह उससे दूर रखे जाएँगे।"

आयत 102

لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا ۚ

"वह उसकी आहट तक नहीं सुनेंगे।"

सूरह मरियम की आयत 71 {وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ} के मुताबिक़ एक दफ़ा जहन्नम का मुशाहिदा तो सबको कराया जाएगा, लेकिन फिर इसके बाद उसको अहले जन्नत से बहुत दूर कर दिया जाएगा।

وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ۚ ١٠٢

"और वह अपनी दिल पसंद ख्वाहिशों में हमेशा रहेंगे।"

तमाम मरगूबाते नफ्स अहले जन्नत को फ़राहम कर दी जाएगी और वह इस कैफ़ियत में हमेशा रहेंगे।

आयत 103

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ

"वह बड़ी घबराहट इन्हें परेशान नहीं करेगी"

क़यामत की सूरतेहाल बहुत ही भयानक होगी। अगली सूरत (सूरतुल हज) के आग़ाज़ (आयत 1) में क़यामत की हौलनाक कैफ़ियत का ज़िक्र यूँ किया गया है: {يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ} "ऐ लोगो! अपने रब का तक़वा इख़्तियार करो। क़यामत का ज़लज़ला यक़ीनन बहुत बड़ी चीज़ है।" लेकिन आयत ज़ेरे नज़र में यह ख़ुशख़बरी दी गई है कि अल्लाह के नेक बन्दों को उससे कोई तकलीफ़ और परेशानी नहीं होगी।

"फ़ज़अ अकबर" से मुराद यहाँ सिर्फ़ क़यामत के दिन की सख्तियाँ ही नहीं बल्कि ज़माना-ए-क़ुर्बे क़यामत की सख्तियाँ भी हैं। इस सूरतेहाल का ज़िक्र अहादीस में काफी तफ़सील से मिलता है। इन तफ़सीलात के मुताबिक़ क़ुर्बे क़यामत के ज़माने में मुसलमानों को ईसाईयों और यहूदियों के ख़िलाफ़

एक बहुत ख़ौफ़नाक जंग लड़ना होगी। इस जंग के कई मराहिल होंगे। मुसलमानों को इसमें बहुत बड़े नुक़सान का सामना करना पड़ेगा, लेकिन अल्लाह की ख़ुसूसी मदद मुसलमानों के शामिले हाल होगी। अल्लाह की यह मदद ज़ाहिरी और माद्दी अस्बाब की सूरत में भी सामने आएगी। इन्हीं अस्बाब में से एक सबब सरज़मीन अरब में एक मुजद्दिद इमाम मेहदी का ज़हूर भी होगा। फिर जब हज़रत मसीह अलै. का नुज़ूल होगा तो मुसलमान हज़रत मसीह अलै. और इमाम मेहदी की क़यादत में ईसाईयों और यहूदियों के इत्तेहाद का मुक़ाबला करेंगे। इससे पहले खुरासान और अफ़गानिस्तान के इलाक़ों में (मेरे अंदाज़े के मुताबिक़ इसमें पाकिस्तान का इलाक़ा भी शामिल होगा) इस्लामी हुकूमत क़ायम हो चुकी होगी और इस हुकूमत की तरफ़ से मज़कूरा जंग में मुसलमानों की मदद के लिये अफ़वाज भेजी जाएँगी। इस जंग में मुसलमानों की कामयाबी के बाद आज़माइश का आख़री मरहला याजूज और माजूज की यलगार की सूरत में सामने आएगा। इसके बाद इस्लाम का ग़लबा होगा और पूरी दुनिया में ख़िलाफ़त अला मनहाजुन्नबुवा क़ायम हो जाएगी, जो लगभग चालीस साल (मुख्तलिफ़ रिवायात में मुख्तलिफ़ मुद्दत मज़कूर है) तक रहेगी। ये मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ की उम्मत का पाँचवाँ दौर होगा, जिसकी ख़बर अहादीस में दी गई है। हज़रत नौमान बिन बशीर रज़ि. हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. से रिवायत करते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:

تَكُونُ النُّبُوَّةُ فِيكُمْ مَاشَاء اللهُ اَنْ تَكُوْنَ، ثُمَّ يَرْفَعُهَا اِذَا شَاءَ اَنْ يَّرْفَعَهَا ، ثُمَّ تَكُوْنُ خِلاَفَةً عَلٰى مِنْهَاجِ النُّبُوَّةِ، فَتَكُوْنُ مَا شَاء اللهُ اَنْ تَكُوْنَ، ثُمَّ يَرْفَعُهَا اِذَا شَاء اللهُ اَنْ يَّرْفَعَهَا ، ثُمَّ تَكُوْنُ مُلْكًا عَاضًّا ' فَيَكُوْنُ مَا شَاء اللهُ اَنْ يَكُوْنَ، ثُمَّ يَرْفَعُهَا اِذَا شَاءَ اَنْ يَّرْفَعَهَا ، ثُمَّ تَكُوْنُ مُلْكًا جَبْرِيَّةً' فَتَكُوْنُ مَا شَاء اللهُ اَنْ تَكُوْنَ، ثُمَّ يَرْفَعُهَا اِذَا شَاءَ اَنْ يَّرْفَعَهَا ، ثُمَّ تَكُوْنُ خِلَافَةً عَلٰى مِنْهَاجِ النُّبُوَّةِ)) ثُمَّ سَكَتَ

"दौरे नबुवत तुम में उस वक़्त तक रहेगा जब तक अल्लाह चाहेगा, फिर जब वह इसको ख़त्म करना चाहेगा इसको ख़त्म कर देगा। फिर नबुवत की तर्ज़ पर ख़िलाफ़त का दौर होगा, फिर वह दौर रहेगा जब तक अल्लाह तआला चाहेगा, फिर वह उसको ख़त्म कर देगा जब वह उसको ख़त्म करना चाहेगा। फिर काट खाने वाली बादशाहत होगी। वह दौर भी उस वक़्त तक रहेगा जब तक अलाह चाहेगा, फिर जब वह उसको ख़त्म करना चाहेगा तो ख़त्म कर देगा। फिर जबर की फ़रमारवाई होगी, वह रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा, फ़िर वह उसको ख़त्म कर देगा जब वह उसे ख़त्म करना चाहेगा। फिर नबुवत के तर्ज़ पर दोबारा ख़िलाफ़त क़ायम होगी।" फिर आप ﷺ ख़ामोश हो गए।[3]

इस हदीस की रू से पहला दौर दौरे नबुवत, दूसरा दौर दौरे ख़िलाफ़त अला मनहाजुन्नबुवा, तीसरा दौर ज़ालिम मलूकियत का दौर, चौथा गुलामी वाली मलूकियत का दौर, जबकि पाँचवाँ और आख़री दौर फिर ख़िलाफ़त अला मनहाजुन्नबुवा का है। इस ख़िलाफ़त की ख़बर आप ﷺ ने उस हदीस में भी दी है जो हज़रत शौबान रज़ि. से मरवी है। फ़रमाया:

اِنَّ اللهَ زَوٰى لِيَ الْاَرْضَ فَرَاَيْتُ مَشَارِقَهَا وَمَغَارِبَهَا ' وَاِنَّ اُمَّتِيْ سَيَبْلُغُ مُلْكُهَا مَا زُوِيَ لِيْ مِنْهَا

"अल्लाह तआला ने मुझे पूरी ज़मीन को लपेट कर (या सुकेड़ कर) दिखा दिया। चुनाँचे मैंने उसके सारे मशरिक़ भी देख लिये और तमाम मगरिब भी। और यक़ीन रखो कि मेरी उम्मत की हुकूमत उन तमाम इलाक़ों पर क़ायम होकर रहेगी जो मुझे लपेट कर (या सुकेड़ कर) दिखाए गए।"[4]

इसी तरह हज़रत मिक़दाद बिन अल अस्वद रज़ि. से रिवायत है कि उन्होंने रसूल अल्लाह ﷺ को फ़रमाते हुए सुना:

لاَ يَبْقٰى عَلٰى ظَهْرِ الْأَرْضِ بَيْتُ مَدَرٍ وَلَا وَبَرٍ الاَّ اَدْخَلَهُ اللهُ كَلِمَةَ الْاِسْلَامِ بِعِزِّ عَزِيْزٍ اَوْذُلِّ ذَلِيْلٍ -- اِمَّا يُعِزُّهُمُ اللهُ عَزَّوَجَلَّ فَيَجْعَلُهُمْ مِنْ اَهْلِهَا اَوْ يُذِلُّهُمْ فَيَدِيْنُوْنَ لَهَا)-- قُلْتُ: " فَيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهُ لِلّٰهِ

"रुए अर्ज़ी पर ना कोई ईंट गारे का बना हुआ घर बाक़ी रहेगा ना कम्बलों का बना हुआ ख़ेमा जिसमें अल्लाह इस्लाम को दाख़िल नही कर देगा, ख्वाह किसी इज्ज़त वाले के ऐज़ाज़ के साथ ख्वाह किसी मगलूब की मगलूबियत की सूरत में- (यानि) या लोग इस्लाम क़ुबूल करके खुद भी इज्ज़त के मुस्तहिक़ बन जाएँगे या इस्लाम की बाला-दस्ती तस्लीम करके उसकी फ़रमाबरदारी क़ुबूल करने पर मजबूर हो जाएँगे।" मैं (रावी) ने कहा: तब तो सारे का सारा दीन अल्लाह के लिये हो जाएगा।"(5)

बहरहाल क़ुरान में मौजूद "बैनल सुतूर" इशारों और अहादीस में वारिद सरीह पेशनगोईयों के मुताबिक़ क़यामत से पहले इन वाक़िआत का रूनुमा होना तय है, इसमें किसी शक व शुबह की गुंजाइश नहीं। अलबत्ता इस बारे में यक़ीन से कुछ नहीं कहा जा सकता कि वाक़िआत के इस सिलसिले का आग़ाज़ कब होगा?

इसके बाद क़यामत का मरहला होगा, लेकिन क़यामे क़यामत से क़ब्ल एक खुशगवार हवा चलेगी जिससे तमाम अहले ईमान पर मौत तारी हो जाएगी। इस मरहले के बाद सिर्फ़ फ़ुस्साक़ व फ़ुज्जार ही दुनिया में बाक़ी रह जाएँगे और उन्ही लोगों पर क़यामत क़ायम होगी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: ((لَا تَقُوْمُ السَّاعَةُ الاَّ عَلٰى شِرَارِ النَّاسِ)) "क़यामत सिर्फ़ शरीर लोगों पर ही आएगी।"(6) "अल फ़ज़अ अल अकबर" और "ज़लज़ल्तुस्साअ" की सख्तियों का सामना भी उन्हीं लोगों को करना होगा, जबकि अल्लाह तआला अपने नेक बन्दों को क़यामत से पहले सकून व इत्मिनान की मौत देकर उस दिन की सख्तियों और हौलनाकियों से बचा लेगा।

وَتَتَلَقّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ۭ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ـــ۱۰۳

"और फ़रिश्ते उनसे मुलाकातें करेंगे (यह कहते हुए कि) यह है आप लोगों का वह दिन जिसका आपसे वादा किया गया था।"

आज आप लोगों को ईनामात से नवाज़ा जाएगा, आपकी क़द्र अफ़ज़ाई होगी, खलअतें पहनाई जाएँगी और आला दर्जे की मेहमान नवाज़ी होगी।

आयत 104

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاۗءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۭ

"जिस दिन हम आसमान को लपेट देंगे जैसा लपेटा जाता है काग़ज़ों का तूमार।"

यहाँ पर "समावत" (जमा) के बजाय सिर्फ़ "अस्समाअ" (वाहिद) का इस्तेमाल हुआ है, जिससे इस राय की गुंजाईश पैदा होती है कि यह सिर्फ़ आसमाने दुनिया के लपेटे जाने की ख़बर है और यह कि क़यामत के ज़लज़ले का अज़ीम वाक़िया: { اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ } (अल हज:1) सिर्फ़ हमारे निज़ामे शम्शी के अन्दर ही वक़ूअ पज़ीर होगा। इसी निज़ाम के अन्दर मौजूद कुर्रे आपस में टकराएँगे: {وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ} (अल क़ियामा:9) और यूँ ये पूरा

निज़ाम तह व बाला हो जाएगा। फ़रमाया कि उस दिन हम आसमान को इस तरह लपेट देंगे जैसे किताबों के तूमार (scrolls) लपेटे जाते हैं।

كَمَا بَدَاْنَآ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ۭ

"जैसे हमने पहली मर्तबा इब्तदा की थी (वैसे ही) हम इसका इआदाह करेंगे।"

इस सूरतेहाल को समझने के लिये Theory of the Expanding Universe को भी मद्देनज़र रखना चाहिये। इस नज़रिये (theory) के मुताबिक़ ये कायनात मुसल्सल वसीअ से वसीअतर हो रही है। इसमें मौजूद हर कहकशां मुसल्सल चक्कर लगा रही है और यूँ हर कहकशां का दायरा हर लहज़ा फैलता जा रहा है। इस हवाले से आयत ज़ेरे नज़र के अल्फ़ाज़ से ये मफ़हूम भी निकलता है कि क़यामत बरपा करने के लिये कायनात के फ़ैलने के इस अमल को उल्टा दिया जाएगा, और इस तरह ये फिर से उसी हालत में आ जाएगी जहाँ से इसके फैलने के अमल का आग़ाज़ हुआ था। इस तस्सवुर को समझने के लिये घड़ी के "फ़नर" की मिसाल सामने रखी जा सकती है, जिसका दायरा अपने नुक्ता-ए-इरतकाज़ के गिर्द मुसल्सल फैलता रहता है, लेकिन जब उसमें चाबी भरी जाती है तो ये फिर से उसी नुक्ता-ए-इरतकाज़ के गिर्द लिपट कर अपनी पहली हालत पर वापस आ जाता है।

وَعْدًا عَلَيْنَا ۭ اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ ١٠٤

"ये वादा हमारे ज़िम्मे है। हम ये ज़रूर करके रहेंगे।"

आयत 105

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُوْنَ ١٠٥

"और हमने लिख दिया था ज़बूर में नसीहत के बाद कि इस ज़मीन के वारिस होंगे हमारे नेक बन्दे।"

अल्फ़ाज़ के मफ़हूम के मुताबिक़ इस विरासत के दो इम्कानी सूरते हैं। एक यह कि क़यामत से पहले अल्लाह का दीन पूरी दुनिया पर ग़ालिब आ जाएगा, अल्लाह के नेक बन्दों की हुकूमत तमाम रुए ज़मीन पर क़ायम हो जाएगी और यूँ वह पूरी ज़मीन के मालिक या वारिस बन जाएँगे। दूसरी सूरत यह होगी कि क़यामे क़यामत के बाद इसी ज़मीन को जन्नत में तब्दील कर दिया जाएगा और अहले जन्नत की इब्तदाई मेहमान नवाज़ी (नुज़ुल) यहीं पर होगी (मज़ीद वज़ाहत के लिये मुलाहिज़ा हो तशरीह सूरह इब्राहीम:48)। और यूँ अल्लाह के नेक बन्दे जन्नत के वारिस बना दिये जाएँगे। इस मफ़हूम के मुताबिक़ यहाँ ज़मीन से मुराद जन्नत की ज़मीन होगी।

आयत 106

اِنَّ فِيْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ ١٠٦ۭ

"यक़ीनन इसमें एक बड़ी ख़बर है (अल्लाह की) बंदगी करने वालों के लिये।"

आयत 107

وَمَآ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۱۰۷﴾

"और (ऐ नबी ﷺ!) हमने नहीं भेजा है आपको मगर तमाम जहान वालों के लिये रहमत बना कर।"

यानि आपकी बेअसत सिर्फ़ जज़ीरा नुमाए अरब तक महदूद नहीं है। अगर ऐसा होता तो ज़ज़ीरा नुमाए अरब में इस्लाम के अमली तौर पर ग़लबे के बाद आपकी बेअसत का मक़सद पूरा हो चुका होता, मगर आप ﷺ तो तमाम अहले आलम के लिये भेजे गए हैं। चुनाँचे आपकी बेअसत का मक़सद क़ुरान में तीन मक़ामात (तौबा:33, फ़तह:28 और सफ़:9) पर इन अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाया गया है: { هُوَ الَّذِيۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَهٗ بِالۡهُدٰى وَدِيۡنِ الۡحَقِّ لِيُظۡهِرَهٗ عَلَى الدِّيۡنِ كُلِّهٖ ؕ } "वही ज़ात है जिसने अपने रसूल को भेजा अलहुदा और दीने हक़ के साथ ताकि इसे ग़ालिब कर दे तमाम अदयान पर।" गोया आप ﷺ की बेअसत का मक़सद तब पूरा होगा जब दीन इस्लाम कुल रुए ज़मीन पर ग़ालिब हो जाएगा। इसी मज़मून को इक़बाल ने यूँ बयान किया है:

वक़्त-ए-फ़ुरसत है कहाँ काम अभी बाक़ी है
नूर-ए-तौहीद का इत्माम अभी बाक़ी है!

नूर-ए-तौहीद का इत्माम यानि इस्लाम का बतौर दीन कुल्ली ग़लबा जज़ीरा नुमाए अरब की हद तक तो ﷺ की हयात मुबारका में ही हो गया था। इसके बाद ख़िलाफ़त-ए-राशिदा के दौर में दीन इस्लाम के इस इक़तदार को मज़ीद वुसअत देने का सिलसिला बड़ी शद्दो-मद्द से शुरू हुआ मगर दौरे उस्मानी में एक यहूदी अब्दुल्लाह बिन सबा ने साज़िश के ज़रिये आलमे इस्लाम में "अल फ़ितनतुल कुबरा" खड़ा कर दिया। इसके नतीजे में हज़रत उस्मान रज़ि. शहीद कर दिये गए और फिर मुसलमानों की बाहमी खाना जंगी के नतीजे में एक लाख के क़रीब मुसलमान एक-दूसरे की तलवारों से हलाक हो गए। इस फ़ितने का सबसे बड़ा नुक़सान ये हुआ कि ना सिर्फ़ ग़लबा-ए-इस्लाम की मज़ीद तसदीर व तौसीअ का अमल रुक गया, बल्कि बाज़ इलाक़ों से मुसलमानों को पस्पाई भी इख्तियार करना पड़ी। हुज़ूर ﷺ की बेअसत चूँकि ता क़यामे क़यामत कुल रुए ज़मीन पर बसने वाले तमाम इंसानों के लिये है और आप ﷺ की बेअसत का मक़सद "इज़हारे दीनुल हक़" (दीने हक़ का गलबा) है, इसलिये ये दुनिया उस वक़्त तक ख़त्म नहीं हो सकती जब तक आप ﷺ की बेअसत का ये मक़सद ब-तमाम व कमाल पूरा ना हो और दीन इस्लाम कुल आलमे इंसानी पर ग़ालिब ना हो जाए। इसका सुगरा व कुबरा क़ुरान से साबित है और इसकी तफ़सीलात कुतुबे अहादीस में मौजूद हैं।

आयत 108

قُلۡ اِنَّمَا يُوۡحٰۤى اِلَىَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمۡ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ‌ ۚ فَهَلۡ اَنۡتُمۡ مُّسۡلِمُوۡنَ ﴿۱۰۸﴾

"(ऐ नबी ﷺ!) आप इनको बताइये कि मेरी तरफ़ तो यही वही की जाती है कि तुम्हारा मअबूद बस एक ही मअबूद है, तो क्या तुम (उसकी) फ़रमाबरदारी इख्तियार करते हो?"

आयत 109

فَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَقُلۡ اٰذَنۡتُكُمۡ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ

"फिर अगर ये लोग मुहँ मोड़ लें तो कह दीजिये कि मैंने तो तुम सबको यक्सा तौर पर ख़बरदार कर दिया है।"

मैंने तुम सब लोगों तक बराबर अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया है। मैंने तुम्हारे सरदारों पर भी इत्मामे हुज्जत कर दिया है और अवाम के सामने भी हक़ वाज़ेह अंदाज़ में पेश कर दिया है। अलगर्ज़ तुम्हारे मआशरे का कोई छोटा, कोई बड़ा, कोई अमीर और कोई ग़रीब फ़र्द ऐसा नहीं जिस तक मेरी यह दावत ना पहुँची हो। लिहाज़ा जो काम अल्लाह ने मेरे ज़िम्मे लगाया था मैंने अपनी तरफ़ से उसका हक़ अदा कर दिया है।

وَاِنۡ اَدۡرِىۡۤ اَقَرِيۡبٌ اَمۡ بَعِيۡدٌ مَّا تُوۡعَدُوۡنَ ۱۰۹

"और मैं नहीं जानता कि जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जा रहा है वह क़रीब है या दूर।"

तुम लोगों को जो वईद सुनाई जा रही है, जिस अज़ाब या क़यामत के वक़ूअ पज़ीर होने से मुताल्लिक़ तुम लोगों को ख़बरदार किया जा रहा है, उसके बारे में कोई "टाईम टेबल" मैं तुम लोगों को नहीं दे सकता। मैं नहीं जानता कि अल्लाह का वह वादा कब पूरा होगा, अलबत्ता ये बात तय है कि अपने करतूतों के नताइज व अवाक़ब बहरहाल तुम लोगों को भुगतने होंगे।

क़यामत के वक़ूअ पज़ीर होने के बारे में क़तई इल्म तो सिर्फ़ अल्लाह तआला ही के पास ही है, अलबत्ता क़ुरान में जा-बजा क़यामत और आसारे क़यामत के बारे में इशारे मिलते हैं। अहादीस नबवी की किताबुल मलाहिम, किताबुश्शरातुस्साआ और किताबुल फ़ितन के अंदर भी क़ुर्बे क़यामत के ज़माने के हालात व वाक़िआत बहुत तफ़सील से बयान हुए हैं। इस ज़िमन में साबक़ा इल्हामी क़ुतुब के अन्दर भी बहुत सी पेशगोइयाँ मौजूद हैं। अगरचे उन क़ुतुब में बड़ी हद तक रद्दो-बदल कर दिया गया है, लेकिन उनकी बाज़ इबारात अपनी असली हालत में आज भी मौजूद हैं। इन पेशगोइयों के हवाले से बाईबल की आख़री किताब Book of Revelation भी बहुत अहम है जो हज़रत योहन्ना (John) के मकाशफ़ात पर मुश्तमिल है, जो हज़रत ईसा अलै. के हवारियों में से थे और हज़रत याहिया अलै. पैग़म्बर (योहन्ना:John the Baptist) के हमनाम थे। माज़ी क़रीब की शख्सियात में Nostradamous, नेअमत शाह वली, गांधी जी (इनकी ज़ाती डायरी की दरयाफ्त के बाद ये पेशगोइयाँ सामने आई हैं) और वाइन बर्गर की पेशगोइयाँ मिलती हैं। इस सब का खुलासा ये है कि क़यामत से पहले इस दुनिया पर बहुत मुश्किल हालात आने वाले हैं। आसार व क़राइन से मालूम होता है कि वह वक़्त अब ज़्यादा दूर नहीं, लेकिन उसके वक़ूअ के बारे में क़तई इल्म सिर्फ़ अल्लाह तआला को है।

आयत 110

اِنَّهٗ يَعۡلَمُ الۡجَهۡرَ مِنَ الۡقَوۡلِ وَيَعۡلَمُ مَا تَكۡتُمُوۡنَ ۱۱۰

"यक़ीनन वही जानता है बुलंद आवाज़ से कही गई बात को भी और उसे भी जानता है जिसे तुम छुपाते हो।"

आयत 111

وَاِنۡ اَدۡرِیۡ لَعَلَّهٗ فِتۡنَةٌ لَّكُمۡ وَمَتَاعٌ اِلٰی حِیۡنٍ ﴿۱۱۱﴾

"और मैं नहीं जानता, शायद कि (इस ताखीर में) तुम्हारे लिये कोई आज़माइश हो और कुछ मुद्दत तक तुम्हें फ़ायदा (उठाने की मोहलत) देना मक़सूद हो।"

शायद इस अज़ाबे मवऊद के वाक़ेअ होने में ताखीर की वजह यह हो कि अल्लाह तआला इस दुनिया में कुछ अरसा और रहने-बसने की मोहलत देकर तुम लोगों को मज़ीद अज़माना चाहता हो और इसके लिये वह तुम लोगों को मज़ीद Fresh lease of existance अता कर दे। लेकिन बिलआखिर होगा वही जो मैं तुम्हें बता रहा हूँ। इसमें कोई शक नहीं कि उस अज़ाब का आना एक शदनी अम्र है और वह आकर रहेगा।

आयत 112

قٰلَ رَبِّ احۡكُمۡ بِالۡحَقِّ ؕ

"रसूल ने कहा: परवरदिगार! अब हक़ के साथ फ़ैसला फ़रमा दे।"

चूँकि कुफ्फ़ार के साथ कशमकश और रद्दो-कदह का सिलसिला बहुत तवालत इख़्तियार कर गया था, इसलिये ख़ुद हुज़ूर ﷺ भी चाहते थे कि अल्लाह तआला की तरफ़ से अब आख़री फ़ैसला आ जाना चाहिये।

وَرَبُّنَا الرَّحۡمٰنُ الۡمُسۡتَعَانُ عَلٰی مَا تَصِفُوۡنَ ﴿۱۱۲﴾

"और हमारा रब रहमान है, जिससे मदद तलब की जाती है उन बातों के ख़िलाफ़ जो तुम बना रहे हो।"

इस फ़रमान के मुखातिब मुशरिकीने मक्का हैं। गोया हुज़ूर ﷺ मुशरिकीन को मुखातिब करके फ़रमा रहे हैं कि ऐ गिरोह-ए-मुन्करीन! तुम लोगों की मुखालफ़त, हठधर्मी और साज़िशों के ख़िलाफ़ मैं अपने परवरदिगार से मदद का तलबगार हूँ जो मुझ पर बहुत मेहरबान है। चुनाँचे पिछले कई बरस से जो रवैया तुम लोग मेरे ख़िलाफ़, मेरी दावत के ख़िलाफ़ और मेरे पैरोकारों के ख़िलाफ़ अपनाए बैठे हो वह अल्लाह से पोशीदा नहीं है। वह यक़ीनन हमारी मदद फ़रमाएगा और तुम लोगों को तुम्हारे करतूतों की क़रार वाक़ई सज़ा देगा।

بارک اللہ لی و لکم فی القرآن العظیم و نفعنی و ایاکم بالآیات والذکر الحکیم۔